



# भारत का राजपत्र

# The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 126]

नई दिल्ली, मंगलवार, मई 22, 2012/ज्येष्ठ 1, 1934

No. 126|

NEW DELHI, TUESDAY, MAY 22, 2012/JYAISTHA 1, 1934

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 मई, 2012

अंतिम जांच परिणाम

विषय : थाइलैंड और चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित “ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स” (फोर्ड ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स को छोड़कर) के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच।

सं. 14/34/2010-डीजीएडी.—यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली या नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए;

2. यतः मै. ए आई ए इंजीनियरिंग लि. तथा मै. वेलकास्ट स्टील्स लि. (जिन्हें आगे आवेदक कहा गया है) ने चीन जन.गण. और थाइलैंड (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित “ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स” (फोर्ड ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स को छोड़कर) (जिन्हें आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों के बारे में पाटनरोधी शुल्क की जांच शुरू करने के लिए अधिनियम तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष संयुक्त रूप से एक आवेदन दायर किया है और संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

3. और यतः आवेदकों द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 23 मई, 2011 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की, जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया ताकि आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि लागू किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगी।

**क. प्रक्रिया**

4. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरूआत करने वाली सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

- i. प्राधिकारी 23 मई, 2011 की जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रति भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों, आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा घरेलू उद्योग को भेजी और उनसे जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचार अवगत कराने का अनुरोध किया ।
- ii. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रति ज्ञात निर्यातकों तथा भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को उपलब्ध कराई ।
- iii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार, जांच की शुरू आत के बारे में भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों के बारे में भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें । निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की प्रति ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों के नाम तथा पतों के साथ उनके पास भी भेजी गई थी ।
- iv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, संगत सूचना मांगने के लिए संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी गई थी:

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. मेगोटॉक्स कं. लि. कमरा नं.312-313 31वां तल, थाई सी सी टॉवर बिल्डिंग, 889, साउथ सेदर्न रोड, यन्नावा, सेदर्न बैंकाक-10120, थाइलैंड
2	मै. मेगोटॉक्स अलायड मैटीरियल (सुझोऊ) कं. लि., सं. 36, पिंग शेंग रोड, रोग पू टाउन, सुझोऊ इंडस्ट्री पार्क, जियांगसू प्रोविंस-215121, चीन जन.गण.

- v. उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित ने उत्तर दिया है:

1. मै. मेगोटॉक्स कं. लि., थाइलैंड
2. मै. मेगोटॉक्स सिंगापुर प्रा. लि., सिंगापुर
3. मै. मेगोटॉक्स इंडस्ट्रीज प्रा. लि., भारत

vi. चीन जन.गण. के सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा नई दिल्ली स्थित चीन जन.गण. के दूतावास को बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार (एम ई टी) संबंधी प्रश्नावली भेजी गई थी। जांच की शुरूआत के प्रयोजनार्थ, चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य पर चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की परिकलित उत्पादन लागत के आधार पर विचार किया गया था क्योंकि आवेदक ने यह दलील दी थी कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के लिए सूचना उनके पास उपलब्ध नहीं है। प्राधिकारी ने ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को सूचित किया है कि उसका प्रस्ताव पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के मद्देनजर आवेदकों के दावे की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से अनुरोध किया गया था कि वे पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के पैरा 8 के उप-पैरा (2) में कि गए उल्लेखानुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि क्या चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान किया जा सकता है।

vii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार, आवश्यक सूचना मांगने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:

क्र.सं.	आयातकों/निर्यातकों का नाम
1.	मै. बालाजी इंडस्ट्रियल प्रोडक्ट्स लि., राजस्थान
2.	मै. बाल्स एंड साइलपैक्स लि., उत्तर प्रदेश
3.	मै. ए सी सी लिमिटेड सीमेंट, महाराष्ट्र
4.	मै. ग्रासिम इंडस्ट्रीज लिमिटेड सीमेंट डिवीजन, राजस्थान
5.	मै. एलकोन सीमेंट कंपनी प्रा. लि., गोआ
6.	मै. अम्बुजा सीमेंट लि., पं. बंगाल
7.	मै. आंध्रा सीमेंट कं. लि., आंध्र प्रदेश
8.	मै. अंजनी पोर्टलैंड सीमेंट लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
9.	मै. एशियन कॉन्फ्रिएट्स एंड सीमेंट्स प्राइवेट, हिमाचल प्रदेश
10.	मै. गुजरात सिद्धी सीमेंट लिमिटेड, गुजरात
11.	मै. भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, उत्तर प्रदेश
12.	मै. बिरला कार्पोरेशन लि. (सीमेंट डिविजन), उत्तर प्रदेश
13.	मै. खेबर इंडस्ट्रीज (प्रा.) लि., जम्मू एंड कश्मीर
14.	मै. हिन्दुस्तान जिंक, राजस्थान
15.	मै. हिन्डाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड, गुजरात
16.	मै. दि इंडिया सीमेंट लि., तमिलनाडु
17.	मै. जयप्रकाश एसोसिएट्स लि., उत्तर प्रदेश
18.	मै. जयपी रेवा प्लांट, मध्य प्रदेश
19.	मै. जे. के. व्हाइट सीमेंट वर्क्स, राजस्थान
20.	मै. ककाटिया सीमेंट सुगर एंड इंडस्ट्रीज (सीमेंट डिविजन), आंध्र प्रदेश

21.	मै. एन सी एन इंडस्ट्रीज लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
22.	मै. मद्रास सीमेंट लि., आंध्र प्रदेश
23.	मै. माही सीमेंट, राजस्थान
24.	मै. मन्डोवी पेलेट्‌स (चौगुले एंड कंपनी लि. की एक इकाई) गोवा
25.	मै. मेघा टैक्नीकल एंड इंजीनियर्स प्रा.लि., मेघालय
26.	मै. मुरली इंडस्ट्रीज लिमिटेड, महाराष्ट्र
27.	मै. माई होम सीमेंट इंडस्ट्रीज लि., आंध्र प्रदेश
28.	मै. पेन्ना सीमेंट इंडस्ट्रीज लि., आंध्र प्रदेश
29.	मै. हेडलबर्ग सीमेंट इंडिया लि., हरियाणा
30.	मै. एन जी एस व्हाइट सीमेंट कंपनी, तमில்நாடு
31.	मै. राज्य विद्युत उत्पादन निगम लि., उत्तर प्रदेश
32.	मै. प्रीसम सीमेंट लिमिटेड, मध्य प्रदेश
33.	मै. रश्मि सीमेंट लिमिटेड, पं. बंगाल
34.	मै. रेझन कमोडीटीज लि., आंध्र प्रदेश
35.	मै. श्रीराम सीमेंट वर्क्स, (डी सी एम श्रीराम कन्सोलिडेटेड लि. की एक इकाई), राजस्थान ।
36.	मै. रिलायंस इन्फ्रास्ट्रक्चर लि., महाराष्ट्र
37.	मै. टाटा कैमिकल्स लि., गुजरात
38.	मै. वासवदत्ता सीमेंट (प्रो. केसोरम इंडस्ट्रीज लिमिटेड), कर्नाटक
39.	मै. प्रीसम सीमेंट लि., मध्य प्रदेश
40.	मै. शारदा एनजी एंड मिनरल्स लि. इंडस्ट्रियल ग्रोथ सेंटर, छत्तीसगढ़
41.	मै. समृद्धि सीमेंट लि., राजस्थान
42.	मै. सुदे मिनरल्स एंड कैमिकल्स (प्रा.) लि., राजस्थान
43.	मै. सलोनी इंडस्ट्रीज, राजस्थान
44.	मै. त्रिन्यानी सीमेंट (प्रा.) लि., उत्तर प्रदेश
45.	मै. जुआरी सीमेंट लि , आंध्र प्रदेश
46.	मै. पेन्ना सीमेंट इंडस्ट्रीज लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
47.	मै. अल्ट्राटैक सीमेंट लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
48.	मै. ट्रम्बोो इंडस्ट्रीज प्रा. लि., जम्मू एंड कश्मीर
49.	मै. श्री सीमेंट लि., राजस्थान
50.	मै. पन्चाम सीमेंट्‌स एंड मिनरल इंडस्ट्रीज सीमेंट, आंध्र प्रदेश
51.	मै. शिवा सीमेंट लिमिटेड, उड़ीसा
52.	मै. पाराशक्ति सीमेंट इंडस्ट्रीज लि., आंध्र प्रदेश
53.	मै. सौराष्ट्र सीमेंट लिमिटेड, गुजरात
54.	मै. ओरिएंट सीमेंट, आंध्र प्रदेश
55.	मै. सागर सीमेंट्‌स लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
56.	मै. महाराष्ट्र स्टेट पावर जेनरेशन, महाराष्ट्र
57.	मै. ओसीएल इंडिया लिमिटेड, उड़ीसा

58.	मै. मेघालय सीमेंट लिमिटेड, मेघालय
59.	मै. मेहर सीमेंट, मध्य प्रदेश
60.	मै. एम एस पी स्टील एंड पावर लि. छत्तीसगढ़
61.	मै. लाफरेज इंडिया प्रा.लि., छत्तीसगढ़
62.	मै. मानिकगढ़ सीमेंट (सेंचुरी टैक्सटाइल्स एंड इंड्स लि., महाराष्ट्र)
63.	मै. जिन्दल स्टील एंड पावर लिमिटेड, उड़ीसा
64.	मै. केसोरम सीमेंट्स, आंध्र प्रदेश
65.	मै. जयप्रकाश एसोसिएट्स लि., उत्तर प्रदेश
66.	मै. कीर्ति इंडस्ट्रीज लिमिटेड, आंध्र प्रदेश
67.	मै. जेके लक्ष्मी सीमेंट लि., राजस्थान
68.	मै. ग्रीन वैली इंडस्ट्रीज प्रा.लि., मेघालय
69.	मै. इंडिया रिसॉर्सेज लिमिटेड कन्सेन्ट्रेटर प्लांट, झारखण्ड
70.	मै. जे.के. सीमेंट वर्क्स (इकाई : जे.के. सीमेंट लि.), राजस्थान
71.	मै. पानीपत थर्मल पावर स्टेशन, हरियाणा
72.	मै. हम्बोल्डट वेड्ग इंडिया प्रा. लि., दिल्ली
73.	मै. डेक्कन सीमेंट्स लिमिटेड (002) (स्लेग सीमेंट डिविजन), आंध्र प्रदेश
74.	मै. गुजरात स्टेट इलेक्ट्रीसिटी कार्पोरेशन लि., गुजरात
75.	मै. डायमंड सीमेंट, मध्य प्रदेश
76.	मै. इको सीमेंट इंडिया लि., फैक्टरी : पशुपति सीमेंट (प्रा.) लि., उत्तर प्रदेश
77.	मै. श्री दिविजय सीमेंट कंपनी लि., गुजरात
78.	मै. सेंचुरी सीमेंट, छत्तीसगढ़
79.	मै. चुनल चुर्क सीमेंट लि., उत्तर प्रदेश
80.	मै. सीमेंट मैन्युफैक्चरिंग कं. लि. लमस्नोग वर्क्स, मेघालय
81.	मै. चरियोट स्टील एंड पावर (प्रा.) लि., उड़ीसा
82.	मै. चौगुले एंड कंपनी लिमिटेड, गोआ

viii. भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों से आयातक प्रश्नावली के उत्तर प्राप्त हुए हैं:

1. मै. सलोनी इंडस्ट्रीज, राजस्थान
2. मै. आंध्र सीमेंट कं. लि., आंध्र प्रदेश
3. मै. माई होम सीमेंट इंडस्ट्रीज लि., आंध्र प्रदेश
4. मै. चौगले एंड कंपनी लिमिटेड, गोआ
5. मै. लफार्ज इंडिया लि., छत्तीसगढ़

#### प्रतिवादी पक्षकारों के अनुरोध:

प्रतिवादी पक्षकारों ने संक्षेप में निम्नानुसार उल्लेख किया है:

मै. सलोनी इंडस्ट्रीज, राजस्थान: यह उल्लेख किया गया है कि जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की कोई खरीद नहीं की गई थी।

मै. आंध्रा सीमेंट कं. लि., आंध्र प्रदेश: यह उल्लेख किया गया है कि उसने सीमेंट संयंत्र के लिए विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है।

मै. माई होम सीमेंट इंडस्ट्रीज लि., आंध्र प्रदेश: यह उल्लेख किया गया है कि उसने थाइलैंड और चीन जन.गण. से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है। उक्त उत्पाद की खरीद स्थानीय रूप से और मुख्यतः मै. ए आई ए इंजीनियरिंग लि. तथा मै. वेलकास्ट स्टील्स लि. से की जाती है।

मै. चौगुले एंड कं. लि, गोवा: यह उल्लेख किया गया है कि वे किसी भी देश से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं करते हैं बल्कि इसकी प्राप्ति घरेलू रूप से मै. ए आई ए इंजीनियरिंग लि. तथा मै. वेलकास्ट स्टील्स लि. से करते हैं।

मै. लाफार्ज इंडिया प्रा. लि., छत्तीसगढ़: यह बताया गया है कि उन्होंने जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात नहीं किया है।

ix. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के जरिए उपलब्ध कराया गया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा।

x. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस), से जांच अवधि सहित पूर्ववर्ती 3 वर्षों के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों का व्यौरा उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था।

xi. सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत के अनुसार क्षति कीमत के निर्धारण हेतु लागत जांच की गई थी ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

xii. यह जांच जनवरी, 2010 से दिसंबर, 2010 (12 माह) की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों के विश्लेषण में अप्रैल, 2007-मार्च, 2008, अप्रैल, 2008-मार्च, 2009, अप्रैल, 2009-मार्च, 2010 की अवधि और जांच अवधि शामिल थी।

xiii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने 9 मार्च, 2012 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान किया। सार्वजनिक सुनवाई में जिन पक्षकारों ने अपने विचार व्यक्त किए थे उनसे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। विरोधी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर उत्तर दायर करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अवसर दिया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों में दिए गए तर्कों पर इस अंतिम जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।

- xiv. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा विचारित अनिवार्य तथ्यों का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया है और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर इस अंतिम जांच परिणाम में जहां संगत पाया गया है, विचार किया गया है।
- xv. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावों की पर्याप्तता के बारे में की गई थी। संतुष्ट होने के उपरांत प्राधिकारी ने अपेक्षानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को यह निर्देश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराएं।
- xvi. जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है अथवा उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अपना विश्लेषण दर्ज किया है।
- xvii. \*\*\* यह चिन्ह इस अधिसूचना में किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का घोतक है और पाटनरोधी नियमानुसार प्राधिकारी ने उसे गोपनीय ही माना है।

#### **ख. प्रकटन विवरण के बाद हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध :**

प्रकटन विवरण जारी होने के बाद हितबद्ध पक्षकारों ने संक्षेप में निम्नलिखित टिप्पणियां की हैं:

#### **मै. मेगोटाक्स के अनुरोध**

5. प्रकटन विवरण के बाद मै. मेगोटाक्स ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-
- क. भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के लिए मूल सीमा शुल्क 2005-06 में 15.00% से घटाकर 10.00% कर दिया गया है। इसका संबद्ध वस्तु के आयातों के पहुंच मूल्य पर प्रभाव पड़ेगा। उपर्युक्त के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, आयातों के आरोपित पाटन के कारण नहीं हुई है। इसके अलावा, भारत और थाइलैंड के बीच हस्ताक्षरित व्यापार करार में वर्तमान 5% आयात शुल्क में उत्तरोत्तर कमी करते हुए वर्ष 2014 तक शून्य किए जाने की व्यवस्था है।
- ख. घरेलू उद्योग ने हाल ही में अर्थात् जांच अवधि के दौरान ही अपनी क्षमता बढ़ाई है और इसमें आगे और वृद्धि करने के लिए लगाए गए हैं। इससे निर्विवाद रूप से यह अनुमान लगाया जाता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। इसके अलावा, याचिका में लगाए गए अनुमान के अनुसार संयंत्र की उपयोगिता 82% से घटाकर

62% होने की मुख्य वजह घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में अत्यधिक वृद्धि करना है न कि आयातों के कारण हुई वास्तविक क्षति जो वार्षिक और औद्योगिक खपत का एक मामूली हिस्सा जिसकी पूर्ति मुख्यतः घरेलू उद्योग करता है ।

- ग. मालसूची के स्तर का आकलन एक समय विशेष पर किया जाता है और यह जांच करने के लिए इसे बैंचमार्क नहीं किया जा सकता कि क्या घरेलू उद्योग को कोई क्षति हुई है । संगत जांच में यह देखना होगा कि क्या वर्ष दर वर्ष तुलना में कुल उत्पादन और कुल बिक्री में वृद्धि हुई न कि किसी समय विशेष पर केवल मालसूची में घरेलू उद्योग ने अपने वार्षिक प्रकटनों और तुलन पत्रों में स्वयं यह दावा किया है कि ग्राइंडिंग मीडिया की उसकी बिक्री में वर्ष दर वर्ष कैसे वृद्धि दर्ज हुई है ।
- घ. जिस कीमत पर मेगोटाक्स भारतीय ग्राहकों को अपनी वस्तु की बिक्री करती है वह घरेलू उद्योग की उस कीमत से अधिक है जिस पर वह अपनी वस्तु की बिक्री करता है । कृपया यह भी मानें कि आयातित वस्तु को मुद्रा घट-बढ़, सी आई एफ मूल्य पर सीमाशुल्क आयात शुल्क और समुद्री पत्तन से भारतीय पत्तन तक समुद्री भाड़े जमा निकासी एवं अन्य व्यय के रूप में नुकसान होता है । परिणामतः भारतीय बाजार में प्रवेश पाने या राह बनाने के इच्छुक किसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धी को लागत संबंधी इन अन्य बाधाओं को समायोजित करने के लिए मजबूरन कीमत में कमी करनी होती है ताकि स्थानीय आपूर्तिकर्ता के साथ कुछ हद तक समानता रखी जा सके । आयातों की पहुंच कीमत और घरेलू आपूर्तियों की पहुंच कीमत की जांच करना प्रासंगिक होगा ।
- ঙ. प्रमुख औद्योगिक प्रतिस्पर्धियों अर्थात् ए सी सी सीमेंट (मुंबई), अल्ट्राट्रेक सीमेंट (मुंबई), श्री सीमेंट व्यावर, हिन्दुस्तान जिंक उदयपुर तथा एस्सार स्टील्स-विभाग के विचार उन्हें अनुस्मारक भेजकर मांगे जाने चाहिए ।

### घरेलू उद्योग के अनुरोध

घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- इसने निर्यातक द्वारा निर्यातित उत्पाद के ग्रेड और आकार के प्रकटन का अनुरोध किया है क्योंकि निर्यातक द्वारा निर्यातित उत्पाद के ग्रेड और आकार के बारे में कोई गोपनीयता नहीं हो सकती । यह सूचना इसलिए छिपाई गई है क्योंकि निर्यातक घरेलू उद्योग को उसके हितों के संरक्षण से रोकना और कम क्षति मार्जिन रखना चाहता है ।
- क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु समग्र उत्पाद की घरेलू उद्योग को क्षति रहित कीमत की तुलना पाठित सामग्री के भारित औसत पहुंच कीमत के साथ करने के लिए प्राधिकारी का प्रस्ताव सही नहीं है क्योंकि घरेलू उद्योग ने इस बात की स्पष्ट पुस्ति की है कि उत्पाद की लागत और कीमत उत्पाद के ग्रेड और बॉल के आकार के अनुसार भिन्न होती है । विक्रेताओं द्वारा उत्पाद के ग्रेड और बॉलों के आकार का उल्लेख बीजक पर ही किया जाता है । बाल के आकार का पता आयात आंकड़ों से भी चल जाता है । याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि संगत सूचना प्रदान करने में निर्यातक की

विफलता का खामियाजा घरेलू उद्योग नहीं भुगत सकता और न ही उसे भुगतना चाहिए। वर्तमान मामले में निर्यातिक जान बूझकर विफल रहा है। निर्यातिक ने यह महसूस किया है कि भारित औसत क्षति रहित कीमत की तुलना भारित औसत आयात कीमत के साथ किए जाने पर वह कम क्षति मार्जिन हासिल करने में सफल हो जाएगा। अतः निर्यातिक ने सोच समझ कर असहयोग किया है।

- इस उत्पाद के सभी उत्पादक क्रोम अंतर्वस्तु तथा बालों के आकार के आधार पर उत्पाद का उत्पादन और बिक्री करते हैं। यह संबंधित "पक्षकार की अक्षमता" का मामला नहीं है। यह "दुराशयपूर्ण कारणों से निर्यातिक की अनिच्छा" का मामला है। घरेलू उद्योग नोट करता है कि प्राधिकारी ने उत्पाद हेतु घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की संचयी रूप से तुलना विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न ग्रेडों और आकार की दृष्टि से पाटित सामग्री की भारित औसत पहुंच कीमत के साथ की है। यह तुलना पूर्णतः निष्फल है। घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि आयातों के पहुंच मूल्य के साथ क्षति रहित कीमत की तुलना मद-वार की जानी चाहिए। जब तक क्षति रहित कीमत और पहुंच कीमत की तुलना आयातित वस्तु के ग्रेड और आकार के लिए नहीं की जाएगी तो निर्यातिक को आंशिक सहयोग का लाभ मिलेगा क्योंकि क्रोम अंतर्वस्तु के बाबत अलग-अलग आकारों की उत्पादन लागत में भारी अंतर है। 12 मिमी. आकार की उत्पादन लागत 40 मिमी. की उत्पादन लागत की तुलना में 50% से भी अधिक है। जी एम बॉलों की कीमत का निर्धारण हमेशा ग्रेड और आकार के आधार पर ग्राहकों के लिए किया जाता है। उचित तुलना सुनिश्चित करने के दो तरीके हैं (क) समान उत्पाद प्रकार की तुलना द्वारा अथवा (ख) अलग उत्पादों की तुलना और अंतर हेतु समायोजनों द्वारा। परवर्ती भाग से अधिक जटिल गणनाएं शामिल होती हैं और इसलिए जांच प्राधिकारी तीनीय उत्पाद प्रकारों की तुलना को तरजीह देते हैं।
- क्षति मार्जिन का निर्धारण निर्यात के विरुद्ध प्रतिकूल सार निकालकर और निर्यातिक द्वारा निर्यातित वस्तु में उच्चतम क्रोम अंतर्वस्तु तथा न्यूनतम आकार का अनुमान लगाते हुए किया जाना अपेक्षित होता है। किसी अन्य तरीके से असहयोग हेतु निर्यातिक को लाभ मिलेगा और निर्यातिक के आंशिक/असहयोग हेतु घरेलू उद्योग को नुकसान होगा।
- क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु उचित तुलना सुनिश्चित करने के लिए पैकिंग लागत में अंतर का समायोजन अपेक्षित है: घरेलू और निर्यात बिक्री के संबंध में पैकिंग लागत में भारी अंतर है। अतः आयातित उत्पाद के संबंध में शामिल पैकिंग लागत काफी अधिक है जिसके लिए आयातों की पहुंच कीमत के साथ तुलना किए जाने से पूर्व समायोजन अपेक्षित है। इस प्रकार या तो आयातों में शामिल पैकिंग के स्वरूप हेतु घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत को समायोजित करना अपेक्षित है या फिर घरेलू उद्योग के उत्पाद में शामिल पैकिंग के स्वरूप हेतु आयातों की पहुंच कीमत को समायोजित करना अपेक्षित है। बहरहाल पैकिंग के एक स्वरूप में आयातों की पहुंच कीमत की तुलना पैकिंग के भिन्न स्वरूप हेतु घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ नहीं की जा सकती। इस प्रकार प्राधिकारी को या तो पाटित आयातों की पहुंच कीमत की तुलना करते समय पैकिंग लागत में अंतर को क्षति रहित कीमत में जोड़ना चाहिए या फिर इस अंतर को आयातों की पहुंच कीमत में से घटा दिया जाना चाहिए।

- क्षति रहित कीमत से संबंधित नए कानून को लागू करना : घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में क्षति रहित कीमत से संबंधित वर्तमान कानून को लागू नहीं किया जा सकता। प्राधिकारी के समक्ष पूर्व में किए गए विस्तृत अनुरोधों में इस बात की पुष्टि होती है कि कच्ची सामग्री और उपयोगिताओं की खपत में उत्पाद के प्रकार के अनुसार अंतर होता है। इस अवधि में कच्ची सामग्री तथा उपयोगिताओं की खपत में अंतर का तात्पर्य अक्षमता से नहीं है। इसका सामान्य आशय इस अवधि में उत्पाद मिश्रण में अंतर से है। क्षति रहित कीमत संबंधी कानून की प्रयोज्यता के बारे में एक विस्तृत नोट संलग्न किया गया है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता घरेलू उद्योग का अनुरोध है वर्तमान मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए उत्पादन लागत को कच्ची सामग्री या उपयोगिताओं में अंतर अथवा क्षमता उपयोग में अंतर के लिए नहीं घटाया जाना चाहिए।
- शुल्क का स्वरूप : याचिकाकर्ता का अनुरोध है कि पाटनरोधी शुल्क केवल अम.डॉ./किंग्रा. में शुल्क के रूप में व्यक्त पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित मात्रा (शुल्क का निर्धारित स्वरूप) के रूप में लागू किया जाए।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

7. प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में संगत पाए गए सभी मुद्दों की जांच निम्नानुसार की है:

- जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि घरेलू उद्योग को क्षति मूल सीमाशुल्क में कमी के कारण हुई है और यह कि घरेलू उद्योग का संबद्ध वस्तु के बाजार के 70% से अधिक हिस्से पर नियंत्रण है और उसने केवल बाजार से प्रतिस्पर्धा समाप्त करने की मंशा से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग की है, प्राधिकारी दोहराते हैं कि भारत में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन किया जा रहा है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है जैसा कि इस जांच परिणाम के संगत खंडों से स्पष्ट हो जाएगा।
- जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि घरेलू उद्योग विश्व बाजार पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था और इस प्रकार वह घरेलू मांग में वृद्धि को पूरा करने में असमर्थ था और इसलिए संबद्ध वस्तु का आयात अनिवार्य बन गया था और यह कि घरेलू उद्योग ने हाल में अपनी क्षमता बढ़ाई है तथा इसमें और वृद्धि करने के लिए संयंत्र लगाए हैं और इसलिए घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये तर्क भ्रामक हैं और तथ्यों पर आधारित नहीं हैं क्योंकि पूर्ववर्ती अवधियों की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची में भारी वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह संबद्ध वस्तु के उत्पादन हेतु अपनी स्थापित क्षमता का उपयोग नहीं कर सका है।
- जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि अनुस्मारक भेजकर प्रमुख औद्योगिक प्रतिस्पर्धियों की राय मांगी जानी चाहिए; प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने वर्तमान जांच में उत्तर देने का अनुरोध करते हुए सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को लिखा था। जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किए जाने के अलावा विभाग की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराई गई थी। चूंकि हितबद्ध पक्षकारों ने वर्तमान मामले

में उत्तर न देना उचित समझा इसलिए यह जांच पूरी करने के लिए समयाभाव के कारण इस चरण पर आगे कोई अवसर नहीं दिया जा सकता ।

- जहां तक क्षति मार्जिन का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि चूंकि मेगोटॉक्स ने प्रकटन पश्चात अपने अनुरोधों में अपने निर्यात सौदों के बारे में क्रोम अंतर्वस्तु का प्रकटन किया है, इसलिए उचित तुलना करने के लिए इसकी जानकारी घरेलू उद्योग को दी गई है । अतः क्षति मार्जिन की तुलना रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर की गई है ।
- जहां तक क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु पैकिंग लागत में अंतर, घरेलू एवं निर्यात बिक्री के संबंध में अंतर्गत पैकिंग लागत में भारी अंतर का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य और उसकी क्षति रहित कीमत की तुलना पैकड़ स्थिति में की है ।
- जहां तक क्षति रहित कीमत के निर्धारण और एतदसंबंधी कानून का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने इस विषय पर संगत नियमों और विनियमों के अनुसार इसका निर्धारण किया है ।

#### ग. विचाराधीन उत्पाद और घरेलू समान वस्तु

8. विचाराधीन उत्पाद "ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स" (फोर्ज्ड ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स को छोड़कर) है । "ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स" (संक्षेप में "जी एम बाल्स") का उत्पादन विविध अनुप्रयोगों में उपयोग हेतु विभिन्न आकारों, प्रकारों और संरचनाओं में किया जाता है । इसके अलावा, यह ग्राहकों की अलग-अलग जरूरतों के अनुसार अलग-अलग कठोरता में उपलब्ध होता है ।

9. विचाराधीन उत्पाद का व्यापक रूप से प्रयोग सीमेंट निर्मित सामग्री, धातु खान, कोयला मिश्रा, ताप विद्युत संयंत्र, रसायन इंजीनियरी, सिरेनिक उद्योग, डोप उद्योग, कागज निर्माण तथा पाउडर तैयार करने के लिए चुम्बकीय सामग्री आदि जैसे हल्के उद्योग में किया जाता है । संबद्ध वस्तु सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 73 के सी.शु. उपशीर्ष 732591100 के अंतर्गत वर्गीकृत है । तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और इस जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है ।

#### समान वस्तु

#### घरेलू उद्योग के अनुरोध

10. आवेदक ने दावा किया है कि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है । भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से निर्यातित संबद्ध वस्तु भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया एवं प्रौद्योगिकी, कार्य उपयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन, तथा वस्तु के टैरिफ

वर्गीकरण जैसी विशेषताओं के रूप में तुलनीय है। दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ता दोनों का अदल-बदल कर उपयोग कर रहे हैं।

### थाइलैंड के प्रतिवादी निर्यातक के अनुरोध

मै. मेगोटाक्स कं. लि., थाइलैंड ने यह बताया है कि घरेलू बाजार और भारतीय बाजार में बेचे गए ग्रेड/उत्पाद में कोई खास अंतर नहीं है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

11. समान वस्तुओं के बारे में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) में निम्नानुसार उपबंध है: -

"समान वस्तु" का अर्थ एक ऐसी वस्तु है जो भारत में पाटन के लिए जांच के अधीन वस्तु के समान हो या प्रत्येक दृष्टि से उसके जैसी हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में कोई अन्य ऐसी वस्तु जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो तब भी उसमें जांचाधीन वस्तु से अत्यधिक मिलती-जुलती विशेषताएं हो;

12. किसी हितबद्ध पक्षकार ने "समान वस्तु" के बारे में घरेलू उद्योग के दावे का खंडन नहीं किया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी का यह विचार है कि संबद्ध देशों से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद रासायनिक विशेषताओं, कार्य एवं उपयोग, उत्पाद विनिर्दिशन वितरण एवं विपान तथा वस्तु के टैरिफ वर्गीकरण के रूप में प्रतिस्थापनीय है।

13. अतः प्राधिकारी का यह भत है कि आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान वस्तु पाटनरोधी नियमानुसार विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तु है।

घ.

### "घरेलू उद्योग" का क्षेत्र और "आधार"

14. जांच की शुरूआत के समय पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में "घरेलू उद्योग" निम्नानुसार परिभाषित था: -

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को केवल घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा।

**पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में बाद में संशोधन किया गया है जो निम्नानुसार है:-**

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाठित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" पद का अर्थ केवल शेष उत्पादकों के उल्लेख के रूप में निकाला जाएगा "

15. यह आवेदन घरेलू उद्योग की ओर से मै. ए आई ए इंजीनियरिंग लि. तथा मै. वेलकास्ट स्टील्स लि. ने संयुक्त रूप से दायर किया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार आवेदकों का हिस्सा संबद्ध वस्तु के कुल भारतीय उत्पादन के 90 प्रतिशत से अधिक बनता है और इस प्रकार आवेदकों का उत्पादन घरेलू उत्पादन का एक बड़ा भाग है। उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि आवेदकों का उत्पादन कुल भारतीय उत्पादन का "एक बड़ा भाग" बनता है।

16. अतः आवेदक पाटनरोधी नियमानुसार "आधार" संबंधी अपेक्षा को पूरा करते हैं और वे "घरेलू उद्योग" हैं।

#### **ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन**

##### **प्राधिकारी द्वारा चीन जन.गण.के संबंध में बाजार अर्थव्यवस्था के दावों की जांच**

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में भारत तथा डब्ल्यू टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। चीन जन.गण. को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमानुसार निर्यातक देश या अलग-अलग निर्यातकों द्वारा इस अनुमान के खंडन के अधीन है।

18. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं। चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार किया जाता है जिसमें आपूर्ति

और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

- इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बहु खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- इस प्रकार की फर्मों दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- विनिमय दर का परिवर्तन बाजार की दर पर किया जाता है।

19. प्राधिकारी ने जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में यह उल्लेख किया कि आवेदकों ने यह दावा किया है कि चीन जन.गण. को बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाना चाहिए और इसलिए चीन जन.गण. के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के अनुसार किया जाना चाहिए। आवेदकों ने यह स्वीकार किया है कि वे चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश से सूचना हासिल नहीं कर सकें और उन्होंने दलील दी है कि चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य के निर्धारा हेतु भारत पर बाजार अर्थव्यवस्था वाले उचित तीसरे देश के रूप में विचार किया जा सकता है। प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को सूचित किया कि उसका प्रस्ताव पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 और 8 के मद्देनजर आवेदकों के दावों की जांच करने का है। अतः चीन जन.गण. के संबंध में संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों से अनुरोध किया गया था कि वे अन्य बातों के साथ-साथ पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 के उप पैरा (3) में किए गए उल्लेखानुसार आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करें ताकि प्राधिकारी इस बात पर विचार कर सकें कि क्या चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया जा सकता है।

20. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी की गई सार्वजनिक सूचना के बाद चीन जन.गण. के किसी निर्यातक/उत्पादक ने बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी प्रश्नावली के उत्तर सहित प्रश्नावली के अपने उत्तर प्रस्तुत नहीं किए हैं और इसलिए गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान के खंडन की मांग नहीं की गई है।

### चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

21. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-। के पैरा 7 में उपबंध है कि

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदर्भ अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा । जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा । जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी ।

22. प्राधिकारी नोट करते हैं कि बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी ऐसे तीसरे देश, जिसमें खासकर संबद्ध वस्तु के संबंध में चीन जन.गण. के मुकाबले विकास का समान स्तर हो, की कीमत या परिकलित सामान्य मूल्य के बारे में रिकॉर्ड में पर्याप्त सूचना तथा साक्ष्य उपलब्ध नहीं है । अतः उपर्युक्त तथ्यों को देखते हुए इस निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-। के पैरा 7 के द्वितीय परंतुक के अनुसार उपलब्ध सूचना के आधार पर चीन जन.गण. के निर्धारण की कार्रवाई करते हैं । तदनुसार विचाराधीन उत्पाद के कारखाना सामान्य मूल्य का निर्धारण विधिवत समायोजित उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया गया है । सामान्य मूल्य का परिकलन निम्नलिखित कार्य प्रणाली के अनुसार किया गया है ।

### चीन जन.गण. के मामले में सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु अपनाई गई कार्य प्रणाली

23. तदनुसार, प्राधिकारी ने निम्नलिखित आधार पर चीन जन.गण. में उत्पादकों के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है:

क. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रमुख कच्ची सामग्री अर्थात् स्क्रैप और फैरो अलॉय की अंतर्राष्ट्रीय कीमत् प्रयास करने के बावजूद प्राप्त नहीं हुई है । अतः प्राधिकारी रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर आगे की कार्रवाई करने के लिए बाध्य है । अतः कुशल घरेलू उत्पादक के आंकड़ों में उल्लिखित

स्क्रैप तथा फैरो अलॉय की कीमत सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु अपनाई गई है।

- ख. घरेलू उत्पादक की कच्ची सामग्री के यथोचित खपत मानकों पर विचार किया गया है।
- ग. कुशल घरेलू उत्पादक की उपयोगिता लागत और यथोचित परिवर्तन लागत अपनाई गई है।
- घ. उपर्युक्तानुसार परिकलित सामान्य मूल्य हेतु कुल उत्पादन लागत निकालने के बाद 5% लाभ जोड़ा गया है।
24. इन जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य 1044 अम.डॉ./मी.ट. बनता है।

#### थाइलैंड के संबंध में सामान्य मूल्य-प्रतिवादी निर्यातक

25. निम्नलिखित कंपनियों ने प्रश्नावली का उत्तर दायर किए हैं:

क्र.सं.	उत्पादक/निर्यातक का नाम
1	मै. मैगोटैक्स कंपनी लि., थाइलैंड
2	मै. मैगोटैक्स सिंगापुर प्रा.लि., सिंगापुर
3	मै. मैगोटैक्स इंडस्ट्रीज प्रा. लि., भारत

#### थाइलैंड में सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए अपनाई गई सामान्य कार्य प्रणाली

26. सर्वप्रथम यह देखा गया था कि कि क्या प्रतिवादी निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की की गई घरेलू बिक्री उनकी घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रतिनिधिक और व्यवहार्य है और क्या प्रतिवादियों द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच की गई थी। जहां कहीं प्रतिवादियों ने अपने घरेलू बाजारों में समान वस्तु की बिक्री के सौदेवार ब्यौरे प्रदान किए हैं, वहां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच और पर्याप्तता जांच करने के बाद संबद्ध वस्तु के सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु उस पर भरोसा किया गया है। जहां कहीं कोई घरेलू बिक्री नहीं हुई है अथवा कोई पर्याप्त घरेलू बिक्री नहीं हुई वहां प्रतिवादी के दावे और प्राधिकारी द्वारा किए गए सत्यापन के अनुसार उत्पादन लागत स्वीकार की गई है। जहां ऐसा करना संभव नहीं हुआ है, वहां प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है।

27. व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच का निर्धारण करने के लिए कंपनी को सलाह दी गई थी कि वह मौके पर सत्यापन के दौरान संबद्ध उत्पाद की उत्पादन लागत का ब्यौरा दिखाएं। कंपनी इस मौके पर ऐसा करने में विफल रही और इसलिए संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत का परिकलन किया गया है। यह भी देखा गया है कि लगभग 80 प्रतिशत से अधिक घरेलू बिक्री इस प्रकार से परिकलित उत्पादन लागत के मुकाबले लाभकारी है। प्रकटन विवरण के बाद किए गए अनुरोधों के अनुसार मै. मेगाटॉक्स इंड लि. ने भारत को निर्यातित विभिन्न ग्रेडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है अतः प्राधिकारी ने कंपनी के लिए पाटन मार्जिन की गणना करने हेतु पी सी एन-वार विश्लेषण किया है। चूंकि घरेलू बाजार में ई एस एम एम 040 बी वाई की कोई बिक्री नहीं हुई थी, इसलिए लाभ सहित उत्पादन लागत पर सामान्य मूल्य के रूप में विचार किया गया है।

#### थाइलैंड के सहयोगी निर्यातिकों/उत्पादकों के बारे में सामान्य मूल्य का निर्धारण

28. प्राधिकारी ने निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुए संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातिकों/उत्पादकों को प्रश्नावली भेजी।

29. इसके उत्तर में मै. मेगाटॉक्स कं. लि., थाइलैंड ने वर्तमान मामले में निर्यातिक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। यह बताया गया है कि कंपनी ग्राइंडिंग मीडिया का विनिर्माण कर उसकी सीधे बिक्री अपने थाई ग्राहकों को करती है। भारतीय ग्राहक मै. मेगाटॉक्स इंड प्रा. लि. (एम आई पी एल) अथवा मै. मेगाटॉक्स सिंगापुर, प्रा. लि. को ऑर्डर देते हैं जो बाद में इन ऑर्डरों को मै. मेगाटॉक्स कंपनी लिमिटेड (थाइलैंड) के पास भेजती है। आगे यह बताया गया है कि घरेलू बाजार में और भारतीय बाजार में बेचे गए ग्रेड/उत्पाद में कोई खास अंतर नहीं है।

#### मै. मेगाटॉक्स कं. लि., थाइलैंड

30. कंपनी द्वारा प्रस्तुत प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया था। इसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया गया है कि जांच अवधि के दौरान भारतीय बाजार में और थाई बाजार में कंपनी द्वारा केवल 5 सामान्य ग्रेड बेचे गए हैं। भारतीय बाजार और थाई बाजार, दोनों में बेचे गए पांचों ग्रेड निम्नानुसार हैं :-

उत्पाद कोड	व्यापक श्रेणी
ईएसएमएम017ए ई	ई-12
ईएसएमएम020ए ई	ई-12
ईएसएमएम025ए ई	ई-12
ईएसएमएम015ए ई	ई-12
ईएसएमएम 040 बी वाई	ई-55

31. तथापि, कंपनी के प्रतिनिधियों के साथ मौके पर सत्यापन के दौरान सहित की गई कई बातचीतों के दौरान वे उस आधार को स्पष्ट नहीं कर सके जिस आधार पर ये ग्रेड तैयार किए गए थे। चूंकि प्रदान किए गए अवसरों के बावजूद कंपनी उत्पाद में अंतर हेतु कोई उचित तर्क नहीं दे सकी, इसलिए प्राधिकारी कंपनी के लिए पाटन मार्जिन की गणना हेतु पी सी एन वार विश्लेषण करने में असमर्थ हैं। यह भी नोट किया गया था कि कुछ ग्रेडों में उत्पादन लागत समान थी। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया था कि कंपनी के लिए सामान्य मूल्य की गणना उत्पाद की घरेलू बिक्री के आधार पर की जाए। कंपनी को सलाह दी गई थी कि वह समायोजनों, यदि कोई हो, की पुष्टि करते हुए उनका दावा करे। अतः सामान्य मूल्य की गणना उपर्युक्त कार्य प्रणाली के आधार पर की गई है। कारखाना सामान्य मूल्य निकालने के लिए समुद्री भाड़े तथा समुद्री लागत के संबंध में किए गए दावे और मौके पर सत्यापन के दौरान किए गए सत्यापन के अनुसार सत्यापन किए गए हैं। प्रकटन विवरण के बाद किए गए अनुरोधों के अनुसार मै. मेगोटाक्स इंडिलि. ने भारत को निर्यातित विभिन्न ग्रेडों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है अतः प्राधिकारी ने कंपनी के लिए पाटन मार्जिन की गणना करने हेतु पी सी एन - वार विश्लेषण किया है। चूंकि घरेलू बाजार में इस एम एम 040 बी वाई की कोई बिक्री नहीं हुई थी, इसलिए लाभ सहित उत्पादन लागत पर सामान्य मूल्य के रूप में विचार किया गया है जो निम्नानुसार बनता है :

अम.डा./मी.ट. में

उत्पाद कोड	सामान्य मूल्य
ईएसएमएम015ए ई	***
ईएसएमएम017ए ई	***
ईएसएमएम020ए ई	***
ईएसएमएम025ए ई	***
ईएसएमएम 040 बी वाई	***
	***

#### असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के बारे में सामान्य मूल्य का निर्धारण

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैंड के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। अतः उनके मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर किया गया है। तदनुसार, सामान्य मूल्य का परिकलन उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर किया गया है जो \*\*\* टी एच बी/मी.ट. बनता है।

#### उन निर्यात कीमत

प्रतिवादी उत्पादकों के लिए निर्यात कीमत  
मै. मेगोटॉक्स कंपनी लि., थाइलैंड

33. प्रधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या प्रतिवादी कंपनियों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण प्रतिवादी द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों के आधार पर किया जा सकता है। यह

नोट किया जाता है कि भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात दो तरीकों से किया गया है अर्थात् भारतीय ग्राहकों ने मै. मेगोटॉक्स इंड प्रा. लि. (एम आई पी एल) अथवा मै. मेगोटॉक्स सिंगापुर प्रा.लि. को ऑर्डर दिए हैं, जिन्होंने बाद में ये ऑर्डर मै. मोगो टॉक्स कंपनी लि. (थाइलैंड) को भेजे हैं । यह भी नोट किया जाता है कि ये ऐसी ग्रुप कंपनियां हैं जो अनिवार्यतः थाइलैंड स्थित अपनी संबद्ध कंपनी की विपणन शाखा के रूप में कार्य करती हैं । कंपनी ने अन्य बातों के साथ-साथ यह तय किया था कि पाटन मार्जिन की गणना उसकी प्रत्येक विपणन शाखा के लिए अलग की जानी चाहिए । तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. मेगोटॉक्स इंड प्रा. लि. (एम आई पी एल) और मै. मेगोटॉक्स सिंगापुर, प्रा.लि. दोनों ने अनिवार्यतः संबद्ध कंपनी की विपणन शाखा के रूप में कार्य किया है और इसने यह प्रदर्शित नहीं किया है कि ये कंपनियां स्वतंत्र रूप से व्यापार कंपनियों के रूप में कार्य करती हैं । इसके अलावा, भारतीय सहायक कंपनी ने भारत में आयातों में सुविधा प्रदान की है । अतः इस सामले के तथ्यों को देखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि मै. मेगोटॉक्स कंपनी लि. (थाइलैंड) के लिए पाटन मार्जिन निर्धारित करना अधिक उचित होगा भले ही उसने अपने निर्यातों के प्रयोजनार्थ किसी भी विपणन शाखा का चयन किया हो ।

34. प्रतिवादी ने भारत को हुए निर्यात के बारे में परिशिष्ट-2 में सूचना प्रस्तुत की है । कंपनी ने जांच अवधि के दौरान भारत को संबद्ध वस्तु के 2461 मी.ट. का निर्यात किया है । समुद्री भाड़े, टर्मिनल हैंडलिंग प्रभारों, सीमा शुल्क निकासी फीस, समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा तथा कमीशन के लिए समायोजनों का दावा किया है । मौके पर सत्यापन के दौरान यह देखा गया था कि ऋण लागत और बैंक प्रभारों के लिए कोई समायोजन नहीं किया गया है । अतः मौके पर सत्यापन के दौरान यथा सत्यापित समायोजनों को निवल निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु स्वीकार किया गया है । पी सी एन वार विश्लेषण के आधार पर निवल निर्यात कीमत का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

उत्पाद कोड	निर्यात कीमत
ईएसएमएम015ए इ	***
ईएसएमएम017ए इ	***
ईएसएमएम020ए इ	***
ईएसएमएम025ए इ	***
ईएसएमएम 040 बी वाई	***
	***

#### असहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण

35. चूंकि संबद्ध देश के संबद्ध वस्तु के किसी अन्य उत्पादक/निर्यातक से कोई अन्य उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है, इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(2) के अनुसार "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण किया है । तदनुसार, चीन जन.गण. के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में निवल निर्यात कीमत 787 अम.डा./मी.ट. बनती है । इसके अलावा थाइलैंड के उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में निवल निर्यात कीमत \*\*\* अ. एच बी /मी.ट. बनती है ।

च. पाटन मार्जिन

36. उपर्युक्त यथा निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :

थाइलैंड से सहयोगी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन

अम.डॉ./मी.ट. में

उत्पाद कोड	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
ईएसएमएम015ए इ	***	***	***	50-70%
ईएसएमएम017ए इ	***	***	***	20-40%
ईएसएमएम020ए इ	***	***	***	35-55%
ईएसएमएम025ए इ	***	***	***	40-60%
ईएसएमएम 040 बी वाई	***	***	***	20-30%
भारित औसत पाटन मार्जिन				25-45%

थाइलैंड से असहयोगी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन

(अम.डॉ./मी.ट. में)

उत्पाद कोड	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
ईएसएमएम015ए इ	***	***	***	50-70%
ईएसएमएम017ए इ	***	***	***	30-50%
ईएसएमएम020ए इ	***	***	***	30-50%
ईएसएमएम025ए इ	***	***	***	40-60%
ईएसएमएम 040 बी वाई	***	***	***	10-30%
भारित औसत पाटन मार्जिन				30-50%

चीन जन.गण. के लिए पाटन मार्जिन

अम.डॉ./मी.ट. में

उत्पाद कोड	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
	***	***	***	55-75%

**क्षति एवं कारणात्मक संबंध**

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आकार, क्रोम अंतर्वर्स्टु आदि के संबंध में संबद्ध वस्तु के भीतर काफी अंतर है और इन पर क्षति विश्लेषण करते समय संभव सीमा तक विधिवत विचार किया गया है।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

38. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :

- कि आयात मात्रा में समग्र रूप में वृद्धि हुई है, संबद्ध वस्तु की मांग वर्ष 2007-08 में 35313 मी.ट. से बढ़कर 2009-10 में 37,138 मी.ट. हो गई है परंतु घरेलू उद्योग की बिक्री 2007-08 में 27,625 मी.ट. से मामूली बढ़कर 27627 मी.ट. हुई है। अतः यह स्पष्ट है कि भारत में संबद्ध उत्पाद के उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में वृद्धि हुई है और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है।
- कि संबद्ध देशों से कीमत कटौती अलग-अलग और संचयी आधार पर सकारात्मक और अत्यधिक है और यह कि संचयी आधार पर 5-10% कीमत कटौती हुई है। जहां तक जी 12 का संबंध है, यह थाइलैंड और चीन जन.गण. से क्रमशः 5-10% और 30-40% रही है और जी 16 के मामले में थाइलैंड से कीमत कटौती नकारात्मक है और चीन जन.गण. से कोई आयात नहीं हुआ है।
- कि घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में सुधार हुआ था परंतु यह मांग में सुधार की तुलना में कम था। वस्तुतः घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 2007-08 में 77.21% से घटकर 2009-10 में 74.39% हो गया जबकि संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा 2007-08 में 1.33% से बढ़कर 2009-10 में 5.32% हो गया। यदि घरेलू उद्योग अपना बाजार हिस्सा बनाए रखता है तो उसे काफी अधिक मात्रा में उत्पादन और बिक्री करनी पड़ती।
- कि उद्भूत लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी गिरावट आई है। लाभ में गिरावट के परिणामस्वरूप निवेश पर आय तथा नकद लाभ में कमी आई है। यह अनुरोध

किया गया है कि मात्रा संबंधी मापदंडों में वृद्धि उस स्थिति में निरर्थक है जब कीमत मापदंडों अर्थात् लाभ और निवेश पर आय में तदनुरूपी वृद्धि न हुई हो ।

- कि प्रस्तावित जांच अवधि में घरेलू उद्योग की मालसूची में समग्र रूप में और घरेलू उद्योग की बिक्री की तुलना में वृद्धि हुई है । घरेलू उद्योग के पास औसत मालसूची अवधि 13 बिक्री दिवस थी जो जांच अवधि में बढ़कर 25 दिन हो गई है ।

मै. मैगोटॉक्स कं. लि. और उसकी व्यापार कंपनियां मै. मैगोटॉक्स सिंगापुर प्रा.लि., सिंगापुर और मै. मैगोटॉक्स इंड प्रा. लि. भारत की ओर से किए गए अनुरोध

39. मै. मैगोटॉक्स कं. लि. और उसकी व्यापार कंपनियां मै. मैगोटॉक्स सिंगापुर प्रा.लि., सिंगापुर और मै. मैगोटॉक्स इंड प्रा. लि. भारत की ओर से संक्षेप में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- यह तर्क दिया गया है कि भारत में संबद्ध वस्तु के आयात हेतु मूल सीमाशुल्क 2005-06 में 15.00% से घटाकर 2006-07 में 10.00% कर दिया गया है जिसका संबद्ध वस्तु के आयात के पहुंच मूल्य पर प्रभाव पड़ा होगा । इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, आयातों के आरोपित पाटन के कारण नहीं हुई है ।
- जाहिर तौर पर घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु के बाजार के 70% से अधिक हिस्से पर नियंत्रण रखता है । तथापि, बाजार पर पर्याप्त नियंत्रण रखने के बावजूद घरेलू उद्योग ने बाजार से प्रतिस्पर्धा समाप्त करने की मंशा से ही संबद्ध वस्तु पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग की है ।
- घरेलू उद्योग के ये आरोप गलत हैं कि यद्यपि, संबद्ध वस्तु की मांग 2007-08 में 35313 मी.ट. से बढ़कर 2009-10 में 37,138 मी.ट. हुई है परंतु बिक्री 2007-08 में 27,625 मी.ट. से मामूली बढ़कर 2009-10 में 27627 मी.ट. हुई है क्योंकि ऐसा इस वजह से हुआ है कि यह विश्व बाजार पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था और इस प्रकार वह घरेलू मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं था और इसलिए संबद्ध वस्तु का आयात अनिवार्य बन गया था ।
- यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने हाल में इसमें वृद्धि करने के लिए अपनी क्षमता और संयंत्रों में आगे और बढ़ोत्तरी की है, जिससे निर्विवाद रूप से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है । इसके अलावा, याचिका में लगाए गए अनुमान के अनुसार संयंत्र उपयोग 82% से घटकर 62% होने का कारा भी घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में अत्यधिक वृद्धि किया जाना है ।

- यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन के पृष्ठ 25 पर स्वयं यह उल्लेख किया है कि क्षति, यदि कोई हो, चीन से आयातों के कारण ही हुई है और इस प्रकार थाइलैंड से आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

40. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए मुद्दों की निम्नानुसार जांच की गई है:

- जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि घरेलू उद्योग को क्षति मूल सीमाशुल्क में कमी के कारण हुई है, और यह कि घरेलू उद्योग का संबद्ध वस्तु के बाजार के 70% से अधिक हिस्से पर नियंत्रण है और यह कि उसने केवल बाजार से प्रतिस्पर्धा समाप्त करने की मंशा से संबद्ध वस्तु पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग की है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन किया जा रहा है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है जैसा कि इन जांच परिणामों के संगत खंडों से स्पष्ट हो जाएगा ।
- जहां तक इन तर्कों का संबंध है कि घरेलू उद्योग बाजार पर ध्यान केन्द्रित कर रहा था और इसलिए वह घरेलू मांग में वृद्धि की पूर्ण भरपाई करने में समर्थ नहीं था और इसलिए संबद्ध वस्तु का आयात अनिवार्य था और यह कि घरेलू उद्योग ने क्षमता आगे और बढ़ाने के लिए हाल में अपनी क्षमता और संयंत्रों में वृद्धि की है और इसलिए घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है; प्राधिकारी नोट करते हैं कि ये तर्क भ्रामक और तथ्यों पर आधारित नहीं हैं क्योंकि पूर्ववर्ती अवधियों की तुलना में जांच अवधि में घरेलू उद्योग की मालसूची में अत्यधिक वृद्धि हुई है । इसके अलावा, वह संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने के लिए अपनी स्थापित क्षमता का उपयोग करने में असमर्थ रहा है ।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग ने अपने आवेदन में यह उल्लेख किया है कि क्षति चीन जन.गण. से हुए आयातों के कारण हुई है, यह नोट किया जाता है कि यह जांच चीन जन.गण. तथा थाइलैंड के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के पाटन के कारण हुई क्षति का आरोप लगाते हुए घरेलू उद्योग द्वारा दायर विधिवत पुष्टिकृत आवेदन के आधार पर शुरू की गई थी । आगे यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन को उसकी संपूर्णता में पढ़ा जाना चाहिए और इसका मूल्यांकन चुनिदा ढंग से नहीं किया जाना चाहिए । आगे यह नोट किया जाता है थाइलैंड से संबद्ध वस्तु का भारत को भारी मात्रा में निर्यात पाटित कीमतों पर किया गया है ।

## संचयी निर्धारण

41. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध ॥ (iii) में यह उपबंध है कि जब एक से अधिक देश से हुए किसी उत्पाद के आयात की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का निर्धारण अपेक्षित होता है जब वह यह निर्धारित करे कि :-

- (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% से अधिक है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक है, और
- (ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है ।

42. प्राधिकारी नोट करते हैं कि:-

- भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन चीन और थाइलैंड से किया जा रहा है ।
  - प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है;
  - प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है;
  - आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तुओं से सीधी प्रतिस्पर्धा करते हैं जैसा कि निम्नलिखित से स्पष्ट होता है:-
- क. संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्भित उत्पादों और आवेदकों द्वारा विनिर्भित उत्पादों में तुलनीय गुणधर्म हैं । दूसरे शब्दों में संबद्ध देशों और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त वस्तुएं परस्पर समान वस्तुएं हैं ।
- ख. ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो विभिन्न स्रोतों से आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु का उपयोग कर रहे हैं । आयातित और घरेलू दोनों वस्तुओं का अदलं-बदलकर उपयोग किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच तथा आयातित उत्पादों के बीच आपस में सीधी प्रतिस्पर्धा है ।
- ग. प्रत्येक संबद्ध देश से आयात की मात्रा काफी अधिक है ।

43. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के निर्यातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संचयी निर्धारा करना उचित है ।

44. अनुबंध-II के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम-11 में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में "..... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ..... " ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो । कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"

45 भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन जैसे संकेतकों में गिरावट आई है ।

#### क) पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव:

46. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।

#### मात्रात्मक प्रभाव

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पाद का उत्पादन अलग-अलग आकारों और अलग-अलग ग्रेडों में किया जाता है जिसे मुख्यतः क्रोम अंतर्वस्तु के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसकी वजह से लागत और कीमत भिन्न हो जाती है । डी जी सी आई एंड एस द्वारा प्रकाशित सारांश सूचना में ग्राइंडिंग मीडिया बाल्स और ढलाई की सूचना शामिल है । तांगे यह नोट किया जाता है कि डी जी सी आई एंड एस के आंकड़ा आधार में अलग-अलग क्रोम अंतर्वस्तु का उल्लेख करते हुए सौदे-वार आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं । इसके अलावा, डी जी सी आई एंड एस से ढलाई (जो संबद्ध वस्तु का भाग नहीं है) को भी अभिज्ञात कर उसे अलग नहीं किया जा सकता । अतः प्राधिकारी ने आवेदकों द्वारा इंटरनेशनल बिजनेस इन्फॉर्मेशन सर्विसेज, मुंबई से प्राप्त किए गए सौदे वार आयात के आंकड़ों पर विचार किया है । क्षति अवधि के लिए आई बी आई एस के आंकड़ों के अनुसार संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा और मूल्य निम्नानुसार है :

**तालिका 1 - आयातों की मात्रा और मूल्य दर्शाने वाली तालिका**

क्र. सं.	देश	मात्रा मी.ट. में					मूल्य लाख रुपए में			
		07-08	08-09	09-10	जांच अवधि	07-08	08-09	09-10	जांच अवधि	
1	चीन जन. गण.	34	50	214	133	16.97	23.79	77.51	51.52	
2	थाइलैंड	435	1270	1761	2236	203.30	927.07	945.12	1215.66	
3	संबद्ध देश	469	1320	1,975	2,369	220.27	950.86	1022.63	1267.18	
4	अन्य देश	79	1380	35	0.39	36.72	978.72	32.35	0.33	
5	योग	548	2700	2,011	2,369	256.99	1929.58	1,054.97	1267.51	
6	दर रु/मी.ट.									
7	चीन जन. गण.	49903	47572	36164	38770					
8	थाइलैंड	46736	72998	53670	54367					

48. यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान थाइलैंड से आयात की मात्रा में लगातार वृद्धि प्रदर्शित हुई है। तथापि, चीन जन.गण. से हुए आयात की मात्रा में वर्ष 2009-10 तक धीरे-धीरे वृद्धि हुई है और जांच अवधि में मामूली गिरावट आई है। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें वृद्धि हुई है। आगे यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मामूली वृद्धि के साथ क्षति अवधि के दौरान चीन जन.गण. से संबद्ध वस्तु की प्रति इकाई दर में सामान्यतः गिरावट आई है। हालांकि थाइलैंड से संबद्ध वस्तु की प्रति इकाई दर में 2008-09 की अवधि में भारी वृद्धि हुई और उसके बाद 2009-10 की अवधि में भारी गिरावट आई जबकि जांच अवधि में मामूली वृद्धि हुई है। यह देखा जाता है कि आयातों की मात्रा और उनकी कीमत का घरेलू उद्योग के निष्पादन पर भारी प्रभाव पड़ा है।

मांग और बाजार हिस्सा

49. देश में उत्पाद की मांग का निर्धारण घरेलू उत्पादकों की घरेलू बिक्री और सभी स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा के रूप में किया गया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध सर्वोत्तम सूचना के आधार पर अन्य घरेलू उत्पादक की बिक्री का अनुमान 7500 मी.ट. वार्षिक के रूप में लगाया गया है।

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
घरेलू बिक्री	मी.ट.	27,265	26,564	27,209	25,293
अन्य घरेलू उत्पादक की बिक्री	मी.ट.	7500	7500	7500	7500
आयात मात्रा					
चीन जन.गण.	मी.ट.	34	50	214	133
थाइलैंड	मी.ट.	435	1270	1761	2236
अन्य देश	मी.ट.	79	1380	35	---
मांग	मी.ट.	35313	36764	36719	35162
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	77.21	72.26	74.10	71.93
अन्य घरेलू उत्पादक की बिक्री	%	21.24	20.40	20.43	21.33
आयात मूल्य	%				
चीन जन. गण.	%	.10	.14	0.58	0.38
थाइलैंड	%	1.23	3.45	4.80	6.36
अन्य देश	%	0.22	3.75	0.09	-----

50. यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में मामूली अंतर आया है। तथापि, यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने लगभग 6.8% बाजार हिस्सा गंवाया है जबकि थाइलैंड से संबद्ध वस्तु के बाजार हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

### कीमत कटौती

51. निम्नलिखित तालिका से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु द्वारा घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती की जा रही है।

	इकाई	थाइलैंड	चीन जन.गण.
पहुंच कीमत	रु / मी.ट.	***	***
निवल बिक्री कीमत	रु / मी.ट.	***	***
कीमत कटौती	रु / मी.ट.	5 - 15	45-60

### कीमत हास/न्यूनीकरण

52. बिक्री लागत और निवल बिक्री कीमत से संबंधित आंकड़ों के अवलोकन से यह पता चलता है कि यदि जांच अवधि के आंकड़ों की तुलना आधार वर्ष के आंकड़ों से की जाए तो घरेलू उद्योग की कीमत में स्पष्ट हास हुआ है क्योंकि यह नोट किया जाता है कि बिक्री लागत में लगभग 8.1% की वृद्धि हुई है और निवल बिक्री कीमत में मात्र 5.8% की वृद्धि हुई है। तथापि, यदि 2009-10 की अवधि की तुलना में गिक्री लागत और निवल बिक्री प्राप्ति का अवलोकन किया जाए तो यह नोट किया जाता है कि जहां बिक्री लागत में लगभग 3% की वृद्धि हुई है वहीं निवल बिक्री प्राप्ति में लगभग 6.7% की वृद्धि हुई है। अतः कीमत हास का कोई खास मामला नहीं बनता है। कीमत न्यूनीकरण का मामला भी स्पष्ट नहीं होता है।

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
बिक्री की लागत	रु / मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	105	108
निवल बिक्री कीमत	रु / मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	124	99	106

### घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मापदंड

53. घरेलू उद्योग से संबंधित क्षति के अन्य मापदंड निम्नानुसार हैं:

#### बिक्री मात्रा

54. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री का विश्लेषा निम्नानुसार किया गया है:

बिक्री मूल्य (मी.ट.)	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
घरेलू बिक्री	मी.ट.	27,265	26,564	27,209	25,293
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	97	100	93
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	133	135	176
कुल गिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	117	119	147

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नियंत में अत्यधिक वृद्धि हुई है। तथापि, आधार वर्ष और पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू बिक्री मात्रा में गिरावट आई है।

### क्षमता और क्षमता उपयोग

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
1	क्षमता	मी.ट.	110,600	172,000	172,000	180833
2	कुल उत्पादन	मी.ट.	90935	105845	101214	117663
3	उत्पादन-पी यू सी	मी.ट.	***	***	***	***
4	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	152	155	192
4	क्षमता उपयोग-संयंत्र	%	82.22	61.54	58.85	65.25
5	क्षमता उपयोग-पी यू सी	%	***	***	***	***
6	प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	99.90	117
5	घरेलू बिक्री	मी.ट.	27,265	26,564	27,209	25,293
6	नियंत बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***

56. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग एक ही संयंत्र में संबद्ध वस्तु तथा अन्य ढलाइयों का उत्पादन कर रहा है और इस प्रकार संबद्ध वस्तु तथा अन्य ढलाइयों के लिए क्षमता सृजित की गई है। तथापि, संयंत्र की क्षमता आधार वर्ष में 110600 मी.ट. से बढ़कर 2008-09 में 172000 मी.ट. और जांच अवधि में बढ़कर 180,333 मी.ट. हो गई है। इसके अलावा, उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि संबद्ध वस्तु का उत्पादन आधार वर्ष में \*\*\* मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में \*\*\* मी.ट. हो गया है। संबद्ध वस्तु का क्षमता उपयोग आधार वर्ष में \*\*\* % से बढ़कर जांच अवधि में \*\*\* % हो गया है। अतः यह देखा जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है।

### जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है :

		2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
बनी लागत तथा बिक्री	रु / मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	105	108
निवल बिक्री कीमत	रु / मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	124	99	106
लाभ/(हानि)	रु / मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	130	63	91

57. आंकड़ों का आगे अवलोकन करने से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बढ़ोत्तरी नहीं हुई है। यद्यपि, घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु पर क्षति अवधि के दौरान लगातार लाभ कमा रहा है परंतु आधार वर्ष के दौरान संबद्ध वस्तु पर प्रति इकाई 8461 रुपए का लाभ जांच अवधि में घटकर प्रति इकाई 7735 रु हो गया है।

#### लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद लाभ

58. लाभ/हानि, निवेश पर आय और नकद लाभ के बारे में स्थिति निम्नानुसार है:

		2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
लाभ/(हानि)	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	122	64	87
निवेश पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94	43	60
नकद लाभ	लाख रुपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	138	83	90

59. यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग क्षति अवधि के दौरान लाभ कमा रहा है। तथापि, यह लाभ आधार वर्ष 2007-08 की तुलना में 2008-09 के दौरान काफी अधिक बढ़ा है परंतु उसमें 2009-10 की अवधि में भारी गिरावट आई है और तत्पश्चात जांच अवधि में पुनः वृद्धि हुई है। यह नोट किया जाता है कि यद्यपि, लाभ में तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान समग्र रूप में सुधार हुआ है परंतु लाभ में आधार वर्ष की तुलना में गिरावट आई है। निवेश पर आय और नकद लाभ में लाभप्रदता के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है। हालांकि इसमें आधार वर्ष से गिरावट आई है जिसमें 2009-10 के दौरान अत्यधिक कमी आई परंतु तत्काल पूर्ववर्ती अवधि की तुलना में जांच अवधि में वृद्धि हुई है। तथापि, निवेश पर आय आधार वर्ष में \*\*\*% से घटकर जांच अवधि के दौरान \*\*\*% हो गई है।

#### मालसूची:

60. माल सूची से संबंधित आंकड़ों से निम्नानुसार पता चलता है:

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
औसत स्टाक	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	159	246	258

61. यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में मालसूची में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग स्पष्ट तौर पर अपने संपूर्ण उत्पाद की बिक्री नहीं कर सका जिसके परिणामस्वरूप मालसूची में वृद्धि हुई।

### रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता:

62. रोजगार, मजदूरी और उत्पादकता से संबंधित आंकड़े निम्नानुसार हैं:

	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि (जन. 2010 से दिसं. 2010)
कर्मचारियों की संख्या-	सं.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	128	132	133
मजदूरी-	लाख रु	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	153	167	195
उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी-	रु./मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	132	141	133
प्रति कर्मचारी उत्पादकता-	मी. ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	90	112

63. यह देखा जाता है कि क्षति अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान प्रति इकाई उत्पादन हेतु मजदूरी में भी वृद्धि हुई है जबकि आधार वर्ष की तुलना में 2008-09 और 2009-10 के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है परंतु उसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान सुधार हुआ है। इसके अलावा, यह देखा जाता है कि भुगतान की गई कुल मजदूरी में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है।

### निधियां जुटाने की क्षमता :

64. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के दो घटक हैं। यद्यपि, मै. वेलकास्ट स्टील लि. एकल उत्पाद कंपनी है जबकि मै. ए आई ए इंजी. लिमिटेड ढलाई का भी उत्पादन कर रही है। यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आई है। तथापि, निधि जुटाने की उसकी क्षमता पर अभी भी कोई गंभीर प्रभाव नहीं पड़ा है।

### पाटन मार्जिन की मात्रा

65. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन किया जा रहा है और यह कि पाटन मार्जिन काफी अधिक है।

वृद्धि:

66. यह नोट किया जाता है कि यद्यपि, घरेलू उद्योग क्षति अवधि के दौरान लाभ कमा रहा है परंतु घरेलू उद्योग की वृद्धि में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट की प्रवृत्ति का पता चलता है।

कारणात्मक संबंधघरेलू उद्योग के अनुरोध

67. कारणात्मक संबंध के बारे में यह उल्लेख किया गया है कि :

**मात्रात्मक प्रभाव :** संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पादों के आयातों के कारण कीमत कटौती हो रही है जिसकी वजह से उपभोक्ताओं में चीन की वस्तुओं को तरजीह दी है।  
**परिणामतः:** घरेलू उद्योग घरेलू बाजार में बिक्री कमा रहा है अर्थात् बाजार हिस्से में गिरावट आई है जिसकी वजह से घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।  
**कीमत प्रभाव :** संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयातों के कारण कीमत कटौती हो रही है जिसे घरेलू उद्योग कीमत बढ़ाने से वंचित हुआ है। इसके परिणामस्वरूप नकद लाभ और लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

68. पाटनरोधी नियमों के अनुसार प्राधिकारी पाटित आयातों से इतर ऐसे अन्य किसी ज्ञात कारक की भी जांच करने के लिए बाध्य है, जिससे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है ताकि इन अन्य कारकों से हुई क्षति का कारण पाटित आयातों को न माना जा सके। इस संबंध में जो कारक संगत हो सकते हैं उनमें पाटित कीमतों पर बेचे न गए आयातों की मात्रा और कीमत, मांग में कमी अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन, विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी विकास तथा निर्यात निष्पादन एवं घरेलू उद्योग की उत्पादकता शामिल हैं।

69. इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमों में सूचीबद्ध इन अन्य मापदंडों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। यह नोट किया जाता है कि :

क. तीसरे देशों से आयात :- प्राधिकारी नोट करते हैं कि तीसरे देशों से आयात नगण्य हैं।

ख. मांग में कमी :- प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति अवधि के दौरान मांग में मामूली घट-बढ़ हुई है और क्षति अवधि के दौरान मांग में कोई गिरावट नहीं देखी गई है।

- ग. खपत की पद्धति :- प्राधिकारी की जानकारी में खपत की पद्धति में कोई खास परिवर्तन नहीं लाया गया है और न ही किसी हितबद्ध पक्षकार ने इस बारे में कोई अनुरोध किया है।
- घ. प्रतिस्पर्धा की स्थितियां :- जांच से यह पता नहीं चला है कि प्रतिस्पर्धा की स्थितियां अथवा व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति के लिए जिम्मेदार हैं।
- ड. प्रौद्योगिकी विकास :- जांच से यह पता नहीं चला है कि प्रौद्योगिकी में कोई खास परिवर्तन हुआ है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।
- च. घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन :- वर्तमान क्षति निर्धारण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू और निर्यात बाजार में कीमत तथा लाभप्रदता को अलग किया है। अतः निर्यात निष्पादन को शामिल किए जाने की संभावना के कारण क्षति विश्लेषण अप्रतिनिधिक नहीं है।

70. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हालांकि सूचीबद्ध ज्ञात अन्य कारकों से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता नहीं चलता है तथापि, निम्नलिखित मापदंडों से यह संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है।

- यह देखा जाता है कि संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है जबकि घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है।
- संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है।
- नकद प्रवाह, निवेश पर आय, लाभप्रदता के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

71. अतः प्राधिकारी का यह विचार है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है।

#### क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन:

72. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की संबंधित उत्पादन लागत को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध वस्तु के अलग-अलग ग्रेडों की क्षति रहित कीमत निर्धारित की है। क्षति मार्जिन का निर्धारण करने के लिए घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। क्षति मार्जिन निम्नानुसार निकाला गया है :

**थाइलैंड के प्रतिवादी निर्यातक के लिए क्षति मार्जिन (अम.डा./मी.ट. में)**

अम.डा./मी.ट.

**थाइलैंड के सहयोगी निर्यातक के लिए क्षति मार्जिन अम.डा. मी.ट.)**

उत्पाद कोड	एन आई पी	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
जी-12 15 एम एम	***	***	***	
जी-12 17 एम एम	***	***	***	
जी-12 20 एम एम	***	***	***	
जी-12 25 एम एम	***	***	***	
जी-18 40 एम एम	***	***	***	
			***	0-20

**थाइलैंड के सहयोगी निर्यातक के लिए क्षति मार्जिन अम.डा. मी.ट.)**

उत्पाद कोड	एन आई पी	पहुंच मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
जी-12 15 एम एम	***	***	***	
जी-12 17 एम एम	***	***	***	
जी-12 20 एम एम	***	***	***	
जी-12 25 एम एम	***	***	***	
जी-18 40 एम एम	***	***	***	
			***	0-20

**ज. निष्कर्ष:**

73. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उनमें उठाए गए मुद्दों की जांच और रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी निष्कर्ष निकालते हैं कि:

- (क) संबद्ध देशों ने भारत को विचाराधीन उत्पाद का निर्यात उसके संबद्ध सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है जिसकी वजह से उत्पाद का पाटन हुआ है।
- (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
- (ग) घरेलू उद्योग का वास्तविक क्षति संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है।

**झ. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे**

74. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनराधी शुल्क का प्रयोजन, सामान्यतः “पाटन” की अनुचित व्यापार पद्धतियों द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली “क्षति” को समाप्त

करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा को पुनः बहाल किया जा सके, जो देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी उपायों के लागू किए जाने से संबद्ध देशों से आयातों में किसी प्रकार से बाधा नहीं पहुंचेगी तथा इसलिए उपलभोक्ताओं हेतु उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

75. इस बात को स्वीकार किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्कों के अधिरोपण से सम्बद्ध वस्तुओं के प्रयोग से विनिर्भृत उत्पाद का कीमत स्तर प्रभावित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप इन उत्पादों की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धात्मकता पर भी कुछ प्रभाव पड़ सकता है तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा में कमी नहीं आएगी, विशेष रूप से यदि पाटनरोधी शुल्क का अधिरोपण उस राशि तक प्रतिबंधित रखा जाए जो घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निवारण हेतु आवश्यक है। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय लगाने से पाटन की पद्धतियों द्वारा प्राप्त अनुचित लाभ को दूर किया जाएगा, घरेलू उद्योग की गिरावट पर रोक लगेगी और उपभोक्ताओं को सम्बद्ध वस्तुओं के व्यापक विकल्प की उपलब्धता को बनाए रखने में मदद मिलेगी।

#### ट. सिफारिशें

76. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच की शुरूआत के संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था कि वे अन्य बातों के साथ पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों के पहलुओं के विषय में सकारात्मक जानकारी उपलब्ध करवाएं। पाटनरोधी नियमों के अनुसार पाटन, क्षति एवं तथा कारणात्मक संबंधों के बारे में जांच करने तथा संपन्न करने; एवं सकारात्मक पाटन मार्जिन का निर्धारण करने तथा ऐसे पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को को हुई वार्ताविक क्षति निर्धारित करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि वर्तमान मामले में पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क लागू किया जाना अपेक्षित है। अतः प्राधिकारी, संबद्ध देशों से संबद्ध वरतुं के आयातों पर निम्नलिखित प्रपत्र में और ढंग से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लागू करने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं।

77. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी पाटन मार्जिन तथा क्षति मार्जिन जो भी कम हो के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त किया जा सके। तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वरतुं के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इन सिफारिशों को स्वीकार किए जाने की रिति में इस अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कॉलम 8 में दी गई राशि के अनुसार निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश की जाती है।

क्र.सं.	शीर्ष/उप- -शीर्ष	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	नियांतक	शुल्क राशि अम.डॉ. प्रति मी.ट. में
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1	7325 9100	"ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स" (फोर्जर्ड ग्राइंडिंग मीडिया बॉल्स को छोड़कर)	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई	कोई	387.36
2	-वही-	-वही-	कोई	चीन जन.गण.	कोई	कोई	387.36
3	-वही-	-वही-	चीन जन.गण.	कोई	कोई	कोई	387.36
4	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड	मेगाटॉक्स कं. लि., थाइलैंड	मेगाटॉक्स कं. लि., थाइलैंड	158.80
5	-वही-	-वही-	थाइलैंड	थाइलैंड	कॉलम 5 में उल्लिखित 1 छोड़कर अन्य कोई		187
6	-वही-	-वही-	कोई	थाइलैंड	कोई	कोई	187
7	-वही-	-वही-	थाइलैंड	कोई	कोई	कोई	187

78. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**  
**(Department of Commerce)**  
**(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)**  
**NOTIFICATION**  
New Delhi, the 22nd May, 2012  
**Final Findings**

**Subject:- Anti-dumping investigation concerning imports of 'Grinding Media Balls' (excluding Forged Grinding Media Balls) originating in or exported from Thailand and China PR.**

**No. 14/34/2010-DGAD**,— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules thereof, as amended (hereinafter referred to as the AD Rules);

2. Whereas M/s AIA Engineering Ltd and M/s Welcast Steels Limited, have jointly filed an application(hereinafter referred to as the Applicants before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) in accordance with the Act and the AD Rules for initiation of Anti-dumping duty investigation concerning imports of 'Grinding Media Balls' (excluding Forged Grinding Media Balls) (hereinafter also referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR and Thailand (hereinafter also referred to as the subject countries) and requested for levy of anti-dumping duties on the subject goods.

3. And whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants issued a public notice dated 23<sup>rd</sup> May 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods, originating in or exported from the subject countries, to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which, if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

**A. PROCEDURE**

4. The procedure described herein below has been followed with regard to investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigation by the Authority:

- i. The Authority sent a copy of initiation notification dated 23<sup>rd</sup> May 2011 to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, known importers/ users and the domestic industry as per the addresses made available by the applicants and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.

- ii. The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) supra.
- iii. The Embassies of the subject countries in India were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters/producers was also sent to them along with the names and addresses of the known exporters/producers.
- iv. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters/producers in subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Name of Producer/ Exporter
1	M/s Magotteaux Co Ltd, Room No.312-313 31st Floor Thai CC Tower Building, 889, South Sathorn Road, Yannawa, Sathorn Bangkok- 10120 Thailand
2	M/s Magotteaux Alloyed Material ( Suzhou) Co Ltd, No.36 Ping Sheng Road, Sheng Pu Town, Suzhou Industry Park, Jiangsu Province- 215121, China PR

- v. In response to the above notification, the following have responded:
  - 1. M/s Magotteaux Co Ltd, Thailand
  - 2. M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd., Singapore
  - 3. M/s Magotteaux Industries Pvt. Limited, India
- vi. A Market Economy Treatment (MET) questionnaire was forwarded to all the known exporters/producers from China PR and Embassy of China PR in New Delhi. For the purpose of initiation, the Normal value in China PR was considered based on the constructed cost of production of the subject goods in China PR, as the applicant pleaded that the information for market economy third country is not available to them. This claim has not been contested by any other interested party. The Authority informed known exporters/producers that it proposes to examine the claim of the applicants in the light of paras 7 and 8 of Annexure 1 of the AD Rules. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of the Annexure of the AD Rules to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to co-operative exporters/producers from China PR.
- vii. Questionnaires were sent to the following known importers / users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.No.	Name of Importers/Exporters
1.	M/s Balaji Industrial Products Ltd., Rajasthan.
2.	M/s Balls and Cylpebs Ltd., Uttar Pradesh.
3.	M/s ACC Limited Cement, Maharashtra .
4.	M/s Grasim Industries Limited Cement Division, Rajasthan
5.	M/s Alcon Cement Company Pvt. Ltd., Goa
6.	M/s Ambuja Cements Ltd , West Bengal.
7.	M/s Andhra Cement Co Ltd, Andhra Pradesh.
8.	M/s Anjani Portland Cement Limited, Andhra Pradesh.
9.	M/s Asian Concretes And Cements Private, Himachal Pradesh.
10.	M/s Gujarat Sidhee Cement Limited, Gujarat
11.	M/s Bharat Heavy Electricals Ltd , Uttar Pradesh
12.	M/s Birla Corporation Ltd (Cement Division), Uttar Pradesh
13.	M/s Khyber Industries (P) Ltd, Jammu and Kashmir.
14.	M/s Hindustan Zinc, Rajasthan.
15.	M/s Hindalco Industries Limited, Gujarat.
16.	M/s The India Cements Ltd, Tamil Nadu.
17.	M/s Jaiprakash Associates Ltd, Uttar Pradesh
18.	M/s Jaypee Rewa Plant, Madhya Pradesh
19.	M/s J.K. White Cement Works, Rajasthan
20.	M/s Kakatiya Cement Sugar & Industries (Cement Division), Andhra Pradesh
21.	M/s NCL Industries Limited, Andhra Pradesh
22.	M/s Madras Cements Ltd, Andhra Pradesh
23.	M/s Mahi Cement, Rajasthan
24.	M/s Mandovi Pellets (A Divn. Of Chowgule & Company Ltd.), Goa
25.	M/s Megha Technical & Engineers Pvt Ltd, Meghalaya
26.	M/s Murli Industries Limited, Maharashtra
27.	M/s My Home Cement Industries Ltd, Andhra Pradesh
28.	M/s Penna Cement Industries Ltd, Andhra Pradesh.
29.	M/s Heidelberg Cement India Ltd, Haryana
30.	M/s NGS White Cement Company, Tamil Nadu.
31.	M/s P.Rajya Vidyut Utpadan Nigam Ltd., Uttar Pradesh.
32.	M/s Prism Cement Limited, Madhya Pradesh
33.	M/s Rashmi Cement Limited , West Bengal
34.	M/s Rain Commodities Ltd, Andhra Pradesh.
35.	M/s Shriram Cement Works, (A Division Of DCM, Shriram Consolidated Ltd.), Rajasthan.
36.	M/s Reliance Infrastructure Ltd, Maharashtra.
37.	M/s Tata Chemicals Ltd, Gujarat.
38.	M/s Vasavadatta Cement (Prop. Kesoram Industries Limited), Karnataka
39.	M/s PRISM Cement Ltd., Madhya Pradesh
40.	M/s Sarda Energy & Minerals Limited Industrial Growth Centre, Chhattisgarh.

41.	M/s Samruddhi Cement Limited, Rajasthan
42.	M/s Suday Minerals & Chemicals (P) Ltd., Rajasthan.
43.	M/s Saloni Industries, Rajasthan.
44.	M/s Trinayani Cement (P) Ltd., Uttar Pradesh
45.	M/s Zuari Cement Ltd, Andhra Pradesh
46.	M/s Penna Cement Industries Limited, Andhra Pradesh
47.	M/s Ultratech Cement Limited, Andhra Pradesh
48.	M/s Trumboo Industries Private Limited, Jammu and Kashmir
49.	M/s Shree Cement Ltd, Rajasthan
50.	M/s Panyam Cements & Mineral Industries Cement, Andhra Pradesh
51.	M/s Shiva Cement Limited, Orissa
52.	M/s Parasakti Cement Industries Limited, Andhra Pradesh
53.	M/s Saurashtra Cement Limited, Gujarat
54.	M/s Orient Cement, Andhra Pradesh
55.	M/s Sagar Cements Limited, Andhra Pradesh
56.	M/s Maharashtra State Power Generationm, Maharashtra
57.	M/s OCL India Limited, Orissa
58.	M/s Meghalaya Cements Limited, Meghalaya.
59.	M/s Maihar Cement, Madhya Pradesh
60.	M/s MSP Steel & Power Ltd., Chhattisgarh
61.	M/s Lafarge India Pvt Ltd., Chhattisgarh
62.	M/s Manikgarh Cement (A Divn Of Century Textiles & Inds Ltd, Maharashtra
63.	M/s Jindal Steel & Power Limited, Orissa
64.	M/s Kesoram Cements, Andhra Pradesh
65.	M/s Jaiprakash Associates Ltd, Uttar Pradesh
66.	M/s Keerthi Industries Limited, Andhra Prades.
67.	M/s JK Lakshmi Cement Ltd, Rajasthan.
68.	M/s Green Valliey Industries Pvt. Ltd. , Meghalaya
69.	M/s India Resources Limited Concentrator Plant, Jharkhand
70.	M/s J.K. CEMENT Works (Unit : J.K. Cement Ltd), Rajasthan
71.	M/s Panipat Thermal Power Station, Haryana.
72.	M/s Humboldt Wedag India Private Limited, Delhi.
73.	M/s Deccan Cements Limited (002) (Slag Cement Divn), Andhra Pradesh
74.	M/s Gujarat State Electricity Corp. Ltd., Gujarat
75.	M/s Diamond Cements, Madhya Pradesh
76.	M/s Eco Cement India Ltd. Factory: Pashupati Cements (P) Ltd, Uttar Pradesh
77.	M/s Shree Digvijay Cement Company Ltd, Gujarat
78.	M/s Century Cement, Chhattisgarh
79.	M/s Chunar Churk Cement Ltd, Uttar Pradesh.
80.	M/s Cement Manufacturing Co. Ltd. Lumshnong Works, Meghalaya
81.	M/s Chariot Steel & Power (P) Ltd, Orissa
82.	M/s Chowgule & Company Limited,Goa

viii. Responses to the Importer's questionnaire have been received from the following importers of the subject goods In India:

1. M/s Saloni Industries, Rajasthan.
2. M/s Andhra Cement Co Ltd, Andhra Pradesh.
3. M/s My Home Cement Industries Ltd, Andhra Pradesh.
4. M/s Chowgule & Company Limited, Goa.
5. M/s Lafarge India Pvt Ltd., Chhattisgarh.

**Submissions made by the responding parties:**

The responding parties have, in brief, stated as follows:

**M/s Saloni Industries, Rajasthan:** It has been stated that no purchase of the product under consideration was made during the period of investigation.

**M/s Andhra Cement Co Ltd, Andhra Pradesh:** It has been stated that the product under consideration has not been imported by them for the cement plant.

**M/s My Home Cement Industries Ltd, Andhra Pradesh:** It has been stated that it had not imported the product under consideration from Thailand and China PR. The purchase of the said product are made locally and majorly from M/s. AIA Engineering Ltd. & M/s. Welcast Steels Ltd.

**M/s Chowgule & Company Limited, Goa:** It has been stated that they do not import the product under consideration from any country rather source it domestically from M/s. AIA Engineering Ltd. & M/s. Welcast Steels Ltd.

**M/s Lafarge India Pvt Ltd., Chhattisgarh:** It has been stated that no import of the product under consideration was made by them during the period of investigation.

- ix. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- x. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, including the period of investigation.
- xi. Optimum cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry.
- xii. Investigation was carried out for the period starting from **January 2010 to December 2010 (12 Months)** (POI). The examination of trends, in the context of

injury analysis, covered the periods April 2007-March 2008, April 2008-March 2009, April 2009-March 2010 and the POI.

- xiii. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority provided the opportunity to the interested parties to present their views orally in public hearing held on 09<sup>th</sup> March, 2012. The parties, which presented their views in the public hearing, were requested to file written submissions of the views expressed orally. Interested parties were provided opportunity to file rejoinder submissions on the views expressed by the opposing interested parties. The argument made in the written submissions / rejoinders received from interested parties have been considered, wherever found relevant, in the final findings.
- xiv. In accordance with Rule 16 of the AD Rules, the essential facts considered by the Authority were disclosed to the known interested parties and comments received on the same have been considered, wherever found relevant, in these final findings.
- xv. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claims. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xvi. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.

In this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis, and so considered by the Authority under the AD Rules.

#### Submissions made by the interested parties post Disclosure statement

Following comments, in brief, have been made by the interested parties after issuance Disclosure statement:

#### Submissions made by M/s Magotteaux

Post Disclosure statement, M/s Magotteaux, in brief, has submitted as follows:

The basic customs duty for the imports of the subject goods into India has been reduced from 15.00% in 2005-06 to 10.00% in 2006-07. The same will have a bearing on the landed value of the imports of the subject goods. As a result of the above, the injury, if any, caused to the domestic industry is not on account of the alleged dumping of the imports. Further in the ambit of Trade agreement signed

- between India and Thailand there is progressive reduction in import duty currently 5% and slated to be zero by 2014.
- b. Domestic Industry has in recent past i.e. even during the period of investigation increased its capacity and have plans to further increase the same. This itself leads to an irrefutable presumption that that is no injury that has been caused to the domestic industry. Further the drop in plant utilization, as projected in the petition, from 82% to 62% is mainly on account of significant increase in the capacity by the domestic industry and not by any material injury caused by imports which constitute just a small fraction of the annual industry consumption which is primarily fed by domestic industry.
  - c. The inventory level is measured at a particular time and cannot be a benchmark to examine if there is any injury caused to the domestic industry. The relevant test will be to see if the total production and total sales have increased in a year on year comparison and not just inventory at a point of time. The domestic industry itself has claimed in its annual disclosures and balance sheets how its sales of grinding media have actually registered an upward trend year on year.
  - d. The prices at which Magotteaux sells its goods to Indian customers is higher than the price at which domestic industry sells its goods. Kindly also appreciate that imported goods have a disadvantage in terms of exchange fluctuation, customs import duties on CIF value and sea freight from overseas port to Indian port plus clearing and other expenses. As a result any International player seeking to enter or make inroads in Indian market is perforce liable to reduce its prices to accommodate these other cost barriers to bring some degree of parity with local supplier. It would be pertinent to examine landed price of imports versus landed domestic supplied prices.
  - e. Opinion of major industry players viz: ACC cement ( Mumbai ), Ultratech Cement ( Mumbai ), Shree Cement Beawar, Hindustan Zinc- Udaipur and Essar Steels – Vizag should be sought by sending them a reminder.

#### Submissions made by the domestic industry

The domestic industry, in brief has submitted as follows:

- It has requested for disclosure of grade and size of the product exported by the exporter as there cannot be any confidentiality with regard to the grade and size of the product exported by the exporter. This suppression of information is because exporter wishes to prevent the domestic industry from defending domestic industry's interests and in managing a lower injury margin.
- The Authority's proposal to compare non injurious price of the domestic industry for product as a whole with the weighted average landed price of the dumped material for determining injury margin is not correct as the domestic industry has clearly established that the cost and price of the product varies with the grade of the product and the size of the ball. Grade of the product and size of the balls are mentioned by the sellers on the invoices itself. The size of the ball is evident even in the import data. The petitioner domestic industry submits that failure of the exporter to provide the relevant information cannot and should not penalize the

domestic industry. The failure of the exporter in the present is deliberate and conscious on the part of the exporter. The exporter has realized that it would be able to get lower injury margin if weighted average non injurious price is compared with weighted average import price. Thus, the exporter has preferred non cooperation by design.

- All producers in this product produce and sell the product on the basis of chrome content and size of the balls. It is not a case of "*inability of the party*" concerned. It is a case of "*unwillingness on the part of exporter for malafide reasons*". Domestic industry notes that the Authority has compared non injurious price of the domestic industry for the product cumulatively for various grades and sizes of the product under consideration with the weighted average landed price of the dumped material. The comparison is clearly flawed. Domestic industry submits that comparison non injurious price with landed price of imports needs to be done on apple to apple basis. Unless non injurious price and landed price are compared for the grade and size imported, the exporter shall get rewarded for its partial cooperation as there is very significant difference in cost of production of different sizes, despite the same chrome content. Cost of production of 12 MM size is more than 50% higher as compared to cost of production of 40 MM. GM Balls are always priced to the customer based on grade and size. There are two ways to ensure fair comparison – (a) by doing comparison of identical product types; or (b) by comparing different products and making an adjustment for the difference. The later part involves more complex calculations and therefore the preference with the investigating authorities is to do comparison of comparable product types.
- The injury margin is required to be determined by drawing adverse inference against the exporter and assuming highest chrome content and lowest size in the goods exported by the exporter. Any other approach would be rewarding the exporter for its non cooperation and penalizing the domestic industry for exporter's partial/non cooperation.
- Difference in packing cost requires adjustment to ensure fair comparison for determining injury margin: the packing costs involved in respect of domestic and export sales are significantly different. Thus, the packing cost involved in respect of imported product is much higher and requires an adjustment before the same can be compared with the landed price of imports. Thus, either non injurious price of the domestic industry is required to be adjusted for the form of packing involved in imports; or the landed price of imports is required to be adjusted for the packing form involved in domestic industry product. In any case, landed price of imports in one form of packing cannot be compared with the non injurious price of the domestic industry for different form of packing. Thus, either the Authority should add difference in packing cost to the non injurious price while comparing with the landed price of dumped imports; or the difference should be deducted from the landed price of imports.

- **Application of new non injurious price law:** The domestic industry submits that the current non injurious price law cannot be applied in the facts and circumstances of the present case. Elaborate submissions have earlier been made before the authority establishes that the raw materials and utilities consumption varies with product type involved. Difference in raw materials and utility consumption over the period does not imply any inefficiency. The same simply implies the difference in product mix over the period. A detailed note on applicability of the NIP law has been enclosed. Further, in any case, petitioner domestic industry submits that in the facts and circumstances of the present case, the cost of production should not be reduced either for raw materials or utilities difference or difference in capacity utilization.
- **Form of duty:** Petitioner submits that the anti dumping duty may be imposed only as fixed quantum of anti dumping duty (fixed form of duty), expressed as duty in US\$/kg.

### **Examination by the Authority**

7. The Authority has examined all the issues that were considered pertinent in the instant matter as follows:

- As regards contentions relating to reduction in the basic customs causing injury to the domestic industry and that the domestic industry controls more than 70% of the market of the subject goods and that it has sought imposition of the anti dumping duty on the subject goods with the sole intent to further eliminate competition from the market are concerned; the Authority reiterates that the subject goods are being dumped from the subject countries into India and the same is causing injury to the domestic industry, as would be apparent from the relevant sections of these findings.
- As regards the contentions that the domestic Industry was focusing on the global market and thus was not able to completely meet the increase in the domestic demand and hence the import of the subject goods were inevitable and that the domestic Industry has in recent past increased its capacity and plans to further increase the same and thus there is no injury caused to the domestic industry; the Authority notes that the contentions are misleading and are not based on facts, as the domestic industry's inventories had significantly increased during the POI as compared to the previous periods. Besides, it has not been able to utilize its installed capacity to produce the subject goods.
- As regards the contentions that opinion of major industry players should be sought by sending them a reminder; the Authority notes that it had written to all known interested parties requesting them to respond in the present investigation. The initiation notification was also hosted on the Department's web-site besides publication of the same in the Government of India's gazette. As the interested parties referred to have chosen not to respond in the instant matter, due to time constraints to complete this investigation, no further opportunity can be granted at this late stage.

- As regards injury margin determination, the Authority notes that as M/s Magotteaux has in their post-Disclosure submissions disclosed the chrome contents for the sizes exported, the same has been shared with the domestic industry in order to arrive at a fair comparison. Thus, comparison of the injury margin has been based as per best information available on record.
- As regards difference in packing cost for determining injury margin; the packing costs involved in respect of domestic and export sales are significantly different; the Authority notes that it has landed value of the subject goods and the NIP thereof have compared in packed condition.
- As regards determination of non injurious price and the law thereof; the Authority notes that it has determined the same as per the relevant rules & regulations on the subject.

#### **C. Product under Consideration and Domestic Like Article**

8. The product under consideration is 'Grinding Media Balls' (excluding Forged Grinding Media Balls). 'Grinding Media Balls' (in short, 'GM Balls') are produced in different sizes, shapes and compositions for use in diverse applications. Further, it is available in different hardness depending upon varying requirements of the customers.

9. The product under consideration is extensively used in cement build materials, metal mine, coal slurry, thermal power plant, chemical engineering, ceramic industry, dope industry, light industry such as papermaking and magnetic material etc for powder preparation. The subject goods are classified under Customs sub-heading 7325 9100 of Chapter 73 of the Customs Tariff Act, 1975. However, the Customs classification is indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.

#### **Like Article**

#### **Submissions made by the Domestic industry**

10. The Applicant has claimed that there is no known significant difference in the subject goods produced by the Indian industry and the subject goods exported from the subject countries. The subject goods produced by the Indian industry and imported from the subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.

#### **Submissions made by the Responding Exporter from Thailand**

M/s Magoteaux Co Ltd, Thailand has stated that there is no significant difference in the grade / product sold in the domestic market and in the Indian Market.

#### Examination by the Authority

11. With regard to like articles, Rule 2(d) of the AD Rules provides as under:-

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation:*

12. The claim of the domestic industry with respect to 'like Article' has not been disputed by any interested party. After considering the information on record, the Authority is of the view that there is no known difference in product under consideration exported from the subject countries and the product produced by the Indian industry. Product under consideration produced by the domestic industry is comparable to the imported subject product in terms of chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable.

13. Thus, the Authority is of the view that the subject goods produced by the applicant domestic industry is like article to the product under consideration in accordance with the AD Rules.

#### D. SCOPE OF 'DOMESTIC INDUSTRY' & 'STANDING'

14. Rule 2(b) of the AD Rules at the time of the initiation of the investigation defined 'domestic industry' as under:-

*'domestic industry' means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers only"*

Rule 2(b) of the AD Rules has been subsequently amended to read as under:-

*'domestic industry' means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers."*

15. The application has been jointly filed by M/s AIA Engineering Ltd and M/s Welcast Steels Limited on behalf of the domestic industry. As per information available on record, the Applicants account for over 90% of the total Indian production of the subject goods and thus the production of the Applicants account for a major proportion of the domestic production. It is evident from the above that the Applicants account for 'a major proportion' of total Indian production.

16. The applicants therefore satisfy the 'Standing' requirement and constitute 'domestic industry' according to the AD Rules.

#### E. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

##### Examination of Market Economy claims in respect of China PR by the Authority

17. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the AD Rules.

18. As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy can be rebutted, if the exporter(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject goods from China PR are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether: -

- the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
- such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
- the exchange rate conversions are carried out at the market rate.

19. The Authority indicated, in the initiation notification that the applicants have claimed that China PR should be treated as Non Market Economy and therefore Normal value in case of China PR should be determined in accordance with Para 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The applicants have submitted that they have not been able to access

information from a market economy third country for the purposes of determination of Normal value in respect of China PR and have pleaded that India can be considered as an appropriate market economy third country for determination of normal value in China PR. The Authority informed known exporters/producers from China PR that it proposes to examine the claim of the Applicants in the light of para 7 and 8 of Annexure I of the AD Rules. The exporters/producers of the subject goods from China PR were therefore requested to furnish, *inter alia*, necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 of the Annexure I of the AD Rules to enable the Authority to consider whether market economy treatment be granted to cooperative exporters/producers from China PR.

20. The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority; no exporter/producer from China PR has submitted its questionnaires' responses including the market economy questionnaire response and thus has not sought to rebut the non-market economy presumption.

#### **Determination of Normal value in respect of Exporters / Producers from China PR**

21. Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides that

*In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments.*

22. The Authority notes that sufficient information and evidence is not available on record in respect of the price or constructed value of a market economy third country that has the comparable level of development *vis a vis* China PR, particularly considering the subject goods. Thus, in view of the above facts, the Authority, for the purpose of this determination, proceeds to determine the Normal value in respect of exporters/producers from China PR on available reasonable basis, in terms of second proviso of para 7 of Annexure I to the AD Rules. Accordingly, the ex-works Normal Value of the product under consideration have been determined based on constructed costs of production, duly adjusted. The Normal Value has been constructed as per the methodology described below:

#### **Methodology adopted for constructing Normal Value in case of China PR**

23. Accordingly, the Authority has constructed Normal value for producers in China PR on the following basis:

- a. The Authority notes that international prices of major raw materials, namely Scrap and Ferro alloys have not been accessible to it, despite efforts. Hence, the Authority is constrained to proceed further on the basis of best information available on record. Thus, the prices of Scrap and Ferro alloys as reflected in the data of the efficient domestic producer have been adopted for constructing the normal value.
- b. Efficient consumption norms of raw materials of domestic producer have been considered.
- c. The utilities cost and efficient conversion costs of the efficient domestic producer have been adopted.
- d. After arriving at total cost of production for CNV as above, 5% profit has been added.

24. For the purpose of these findings, the normal value so determined comes to \*\*\* US\$/MT.

**Normal value in respect of Thailand -- responding exporters**

25. Responses to the questionnaire were filed by the following companies:

S.No.	Name of Producer/Exporter
1	M/s Magotteaux Company Ltd., Thailand
2	M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd., Singapore
3	M/s Magotteaux Industries Pvt. Limited, India

**General methodology followed for the responding exporters/producers for determination of Normal Values in Thailand**

26. It was first seen, whether the domestic sales of the subject goods by the responding exporters/producers in their domestic market were representative and viable for permitting determination of Normal value on the basis of their domestic selling prices and whether the ordinary course of trade test was satisfied as per the data provided by the respondents. Wherever the respondents have provided transaction-wise details of the sales of the like article in their home markets, the information so provided has been relied upon to determine the Normal value for the subject goods after carrying out the ordinary course of trade test and sufficiency test. Wherever, there were no domestic sales or no sufficient domestic sales, the costs of production as claimed by the respondent and verified by the Authority have been accepted. And where it was not feasible, the Normal value has been determined by the Authority on the basis of 'facts available' in terms of Rule 6(8) of the AD Rules.

27. For the determination of the ordinary course of trade test, the company was advised to show the details of costs of production of the product concerned during the on-the-spot verification. However, the company failed to do so on the occasion and hence the cost of production of the subject goods has been constructed. It is further seen that over 80% of the domestic sales were profitable *vis-a-vis* the cost of production so constructed. As per post-disclosure statement submissions, M/s Magotteaux Industries Limited has furnished the information on various grades exported to India, therefore the Authority has undertaken PCN-wise analysis to compute the dumping margin for the company. Because there was no sale of ESMM040BY grade in the domestic market, accordingly, cost of production with profit has been considered as normal value.

**Determination of Nominal value in respect of Co-operative Exporters / Producers from Thailand**

28. The Authority sent questionnaire to the known exporters/producers from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed.

29. In response thereto, M/s Magotteaux Co Ltd, Thailand has filed its exporter's questionnaire' response in the instant matter. It has been stated that the company manufactures the grinding media and sells it directly to its Thai customers. Indian customers place the orders with either M/s Magotteaux Industries Pvt. Ltd. (MIPL) or with M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd.; who in turn place the orders with M/s Magotteaux Co. Ltd (Thailand). It has been further stated that there is no significant difference in the grade / product sold in the domestic market and in the Indian Market.

**M/s Magotteaux Co Ltd, Thailand**

30. The questionnaire' response submitted by the company was perused. It has been, *inter alia*, contended therein that during the period of investigation, in Indian Market and in the Thai Market only five common grades have been sold by the Company. The five grades sold in both Indian Market and Thai Market were as follows:

Product Code	Broad Category
ESM M017AE	E12
ESMM020AE	E12
ESMM025AE	E12
ESMM015AE	E12
ESMM040BY	E55

31. However, during number of interactions held with the company's representatives, including during the on-the spot verification, they were not able to spell out the basis on which these grades were devised. As despite opportunities provided, the company was not able to provide any cogent rationale for the product differentiation, the Authority is not able to undertake a PCN-wise analysis to compute the dumping margin for the company. It was also noted the in some the grades the cost of production was identical. The company, was advised to claim adjustments, if any, by substantiating the same. The Normal value has thus been computed as per the methodology explained above. The adjustments as claimed in respect of inland freight and credit costs and verified during the

on-the-spot verification have been made to arrive at *ex factory* normal value. As per post-disclosure statement submissions, M/s Magotteaux Industries Limited has furnished the information on various grades exported to India, therefore the Authority has undertaken PCN-wise analysis to compute the dumping margin for the company. Because there was no sale of ESMM040BY grade in the domestic market, accordingly, cost of production with profit has been considered as normal value. Accordingly, *ex factory* normal value, which works out as follows:

Product Code	Normal Value	In US \$/MT
ESMM015AE	***	
ESMM017AE	***	
ESMM020AE	***	
ESMM025AE	***	
ESMM040BY	***	
	*	

#### **Determination of Normal value in respect of Non-Co-operative Exporters / Producers**

32. The Authority notes that no other exporter/producer from Thailand has responded to the exporter' questionnaire. Therefore, the normal value in their cases has been determined on the basis of 'facts available'. The Normal Values have accordingly been constructed on the basis of best information available.

#### **E. EXPORT PRICE**

##### **Export price for the responding exporters**

###### **M/s Magotteaux Co Ltd, Thailand.**

33. The Authority examined whether the export prices in respect of responding companies could be determined on the basis of questionnaire responses filed by the respondent. It is noted that exports of the subject goods to India have been made in two modes, viz. Indian customers have placed the orders with either M/s Magotteaux Industries Pvt. Ltd. (MIPL) or with M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd.; who in turn placed the orders with M/s Magotteaux Co. Ltd (Thailand). It is further noted that these are group companies and essentially acting as marketing arm of their related company based in Thailand. The company had, *inter alia*, contended that the dumping margins should be computed separately for each of its marketing arms. The Authority, however, notes that both M/s Magotteaux Industries Pvt. Ltd. (MIPL) and M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd have essentially acted as marketing arm for the related company and it has not been demonstrated that these companies act independently as trading entities. Besides, the Indian subsidiary has essentially facilitated imports into India. Therefore, considering the facts of this case, the Authority considers that it would be more

appropriate to determine the dumping margin for M/s Magotteaux Co. Ltd (Thailand), irrespective of which marketing arm it chooses for the purposes of effecting its exports.

34. The respondent has furnished information in Appendix 2 relating to exports to India. The company has exported 2461 MT of the subject goods to India during the POI. The adjustments have been claimed on account of inland freight, terminal handling charges, Customs clearance fee, ocean freight, overseas insurance and commission. It was seen during the on-the-spot verification that no adjustment had been made on account of credit cost and the bank charges. Thus, the adjustments as verified during the on-the-spot verification have been accepted for the determination of the net export price. On the basis of PCN wise analysis, net export price has been determined as follows:

Product Code	Export Price
ESMM015AE	***
ESMM017AE	***
ESMM020AE	***
ESMM025AE	***
ESMM040BY	***
	***

#### Determination of Export Price in respect of Non-Co-operative Exporters/Producers

35. Since no other response has been received from any other producer/exporter of the subject goods from the subject countries; the Authority has determined the Export price as per 'facts available' in terms of Rule 6(3) of the AD Rules. The data has been collated as per the information available on record. Accordingly, the net export price in respect of the other producers/exporters from China PR has been worked out as \*\*\* US \$ /MT. Further, net export price in respect of the producers/exporters from Thailand has been worked out THB \*\*\* /MT.

#### F. DUMPING MARGIN

36. Considering the Normal values and Export prices as determined above, the dumping margins have been determined as follows:

#### Dumping Margin for responding exporter from Thailand

In US\$/MT

Product Code	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
ESMM015AE	***	***	***	50-70%
ESMM017AE	***	***	***	20-40%
ESMM020AE				35-55%

	***	***	***	
ESMM025AE	***	***	***	40-60%
ESMM040BY	***	***	***	20-30%
Weighted average Dumping Margin		***	***	25-45%

**Dumping Margin for Non-co-operative exporter from Thailand**

**(In USD MT)**

Product Code	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin %
ESMM015AE	***	***	***	50-70%
ESMM017AE	***	***	***	30-50%
ESMM020AE	***	***	***	30-50%
ESMM025AE	***	***	***	40-60%
ESMM040BY	***	***	***	10-30%
Weighted average Dumping Margin		***	***	30-50%

**Dumping margin for China PR**

In US\$/MT

Product Code	Normal Value	Export Price	Dumping Margin	Dumping Margin % (Range)
	***	***	***	55-75%

**INJURY AND CAUSAL LINK**

37. The Authority notes that there are significant differences within the subject goods in terms of sizes, chrome content etc and the same have been duly considered, while undertaking the injury analysis to the extent feasible.

**Submissions made by the domestic industry**

38. The following submissions, in brief, have been made by the domestic industry:

- That the volume of imports has increased in absolute terms, the demand of the subject goods has increased from 35313 MT in 2007-08 to 37,138 MT in 2009-10, but the sales of the domestic industry has just increased from 27,625 MT in 2007-08 to

27627 MT. Hence it is evident that there is an increase in the imports with respect to the production and consumption of the concerned product in India and a decline in the market share of the domestic industry.

- That the price undercutting from the subject countries on an individual and cumulative basis is positive and significant and that there is 5-10% undercutting on a cumulative basis. As regards G12 it ranges from 5-10% and 30-40% from Thailand and China PR respectively and as regards G16, there is a negative undercutting from Thailand and no imports from China PR.
- That there was improvement in the production, sales and capacity utilization of the domestic industry but it was relatively less than the improvement in demand. In fact the market share of the domestic industry has declined from 77.21% in 2007-08 to 74.39% in 2009-10 whereas that of the imports from the subject countries has increased from 1.33% in 2007-08 to 5.32% in 2009-10. Had the domestic industry maintained its market share, it would have produced and sold significantly higher volumes.
- That the performance of the domestic industry has materially deteriorated in terms of profits accrued. The decline in profits has resulted in decline in return on investment and cash profit. It has been submitted that the increase in volume parameters is futile if there is no corresponding improvement in the price parameters namely profits and return on investments.
- That the inventory of the domestic industry has increased in the proposed POI in absolute terms as well as in relation to the sales of the domestic industry. Average inventory period with the domestic industry was 13 days of sales which increased to as high as 25 days during POI.

**Submissions made by Submissions made on behalf of M/s Magotteaux Company Ltd., Thailand and its trading entities M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd., Singapore and M/s Magotteaux Industries Pvt. Ltd., India**

39. The following submissions, in brief, have been made on behalf of M/s Magotteaux Company Ltd., Thailand and its trading entities M/s Magotteaux Singapore Pvt. Ltd., Singapore and M/s Magotteaux Industries Pvt. Ltd., India:

- It has been contended that the basic customs duty for the imports of the subject goods into India has been reduced from 15.00% in 2005-06 to 10.00 % in 2006-07 and the same would have a bearing on the landed value of the imports of the subject goods. As a result this, the injury, if any, caused to the domestic industry is not on account of the alleged dumping of the imports.
- Admittedly, the domestic industry controls more than 70% of the market of the subject goods. However, despite having significant control over the market, the

domestic industry has sought imposition of the anti dumping duty on the subject goods, with the sole intent to further eliminate competition from the market.

- The allegations made by the domestic industry that although the demand of the subject goods has increased from 35313 MT in 2007-08 to 37,138 MT in 2009-10, but its sales has just increased from 27,625 MT in 2007-08 to 27627 MT In 2009-10 is incorrect as the same is on account of the fact that it was focusing on the global market and thus was not able to completely meet the increase in the domestic demand and hence the import of the subject goods were inevitable.
- It has been contended that as the domestic Industry has in recent past increased its capacity and plans to further increase the same, this in itself leads to an irrefutable presumption that there is no injury caused to the domestic industry. Further, the drop in plant utilization, as projected in the petition, from 82% to 62% is also on account of significant increase in the capacity by the domestic industry.
- It has been contended that the domestic industry itself at Page 25 of its application states that injury, if any, is only on account of imports from China and thus there is no injury caused to the domestic industry on account of imports from Thailand.

#### Examination by the Authority

40. The issues raised by the interested parties have been examined as follows:

- As regards contentions relating to reduction in the basic customs causing injury to the domestic industry and that the domestic industry controls more than 70% of the market of the subject goods and that it has sought imposition of the anti dumping duty on the subject goods with the sole intent to further eliminate competition from the market are concerned; the Authority notes that the subject goods are being dumped form the subject countries into India and the same is causing injury to the domestic industry, as would be apparent from the relevant sections of these findings.
- As regards the contentions that the domestic Industry was focusing on the global market and thus was not able to completely meet the increase in the domestic demand and hence the import of the subject goods were inevitable and that the domestic Industry has in recent past increased its capacity and plans to further increase the same and thus there is no injury caused to the domestic industry; the Authority notes that the contentions are misleading and are not based on facts, as the domestic industry's inventories had significantly increased during the POI as compared to the previous periods. Besides, it has not been able to utilize its installed capacity to produce the subject goods.
- As regards the contention that the domestic industry in its application has stated that injury is on account of imports from China PR; it is noted that the investigation was initiated on a duly substantiated application filed by the domestic industry alleging injury caused to it on account of dumping of the subject goods originating in or

exported from China PR and Thailand. It is further noted that the application filed by the domestic industry has to be read in its entirety and is not to be evaluated in a selective manner. It has been further noted that the subject goods have been exported to India at dumped prices from Thailand in significant volumes.

### Cumulative assessment

41. Annexure II para (iii) of the AD Rules provides that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigations, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:-

- a. the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the export of individual countries is less than three percent, the imports collectively accounts for more than seven percent of the import of like article and
- b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

42. The Authority notes that:-

- The subject goods are being dumped into India from China and Thailand.
- The margins of dumping from each of the subject countries are more than the *de-minimis* limits prescribed;
- The volume of imports from each of the subject countries is more than the *de-minimis* limits prescribed;
- Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate as the exports from the subject countries directly compete with the like articles offered by the domestic industry in the Indian market, which is evident from the following:-
  - a. The products manufactured by the producers from the subject countries and the products manufactured by the Applicants have comparable properties. In other words, goods supplied by the subject countries and by the domestic industry are *inter-se* like articles.
  - b. There are common parties who are resorting to use of the imported subject goods from various sources and the goods produced by the domestic industry. Both, the imported and the domestic subject goods, are being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product & imported products and *inter-se* amongst imported products.

c. The volume of imports from each of the subject countries is significant.

43. In view of the above, the Authority considers that it would be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from exports of the subject goods from the subject countries

44. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “.... taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....” In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

45. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the AD Rules.

A) Volume Effects of Dumped Imports:

46. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

Volume Effect

47. The Authority notes that product is produced in different sizes and different grades, which is essentially defined in terms of Chrome content, because of which the costs and the prices thereof differ. The summary information published by the DGCI&S includes information of grinding media balls and castings. It is further noted that the transaction-wise data indicating different chrome content is not available in the DGCI&S data-base. Besides, castings (not part of subject goods) also cannot be identified and segregated from the DGCI&S data. Therefore, the Authority has considered transaction-wise imports data as obtained from International Business Information Services, Mumbai (IBIS) by the Applicants. The volume and value of the imports of the subject goods as per data of IBIS for the entire injury period, is as follows:

Table I – Table showing Volume and Value of Imports

SN	Countries	Quantity in MT				Value in Rs Lacs			
		07-08	08-09	09-10	PO1	07-08	08-09	09-10	PO1
1	China PR	34	50	214	133	16.97	23.79	77.51	51.52

2	Thailand	435	1270	1761	2236	203.30	927.07	945.12	1215.66
3	Subject Countries	469	1320	1,975	2,369	220.27	950.86	1022.63	1267.18
4	Other Countries	79	1380	35	0.39	36.72	978.72	32.35	0.33
5	Total	548	2700	2,011	2,369	256.99	1929.58	1,054.97	1267.51
6	Rate Rs./Mt								
7	China PR	49903	47572	36164	38770				
8	Thailand	46736	72998	53670	54367				

48. It is seen that the imports volumes from Thailand have shown continuous increase over the injury period. However, the imports volumes from China PR have increased gradually till 2009-10 and then fell slightly during the POI. These, however, increased in the POI as compared to the base year. It is further noted that rate per unit of the subject goods from China PR has generally fallen over the injury period, with a marginal increase in the POI as compared to the base year. While the rate per unit of the subject goods from Thailand significantly increased in 2008-09 period and then declined significantly in the 2009-10 period, to marginally increase in the POI. It is seen that the performance of the domestic industry has been significantly impacted by the volume of imports and the prices thereof.

#### Demand and market share

49. Demand of the product in the Country has been assessed as the sum of domestic sales of the domestic producers and imports from all sources. The sales of other domestic producer have been estimated as 7500 MT per annum based on best available information available on record.

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI (Jan 2010 to Dec 2010)
Domestic Sales	MT	27,265	26,564	27,209	25,293
Sales of other Domestic Producer	MT	7500	7500	7500	7500
Import Volumes					
China PR	MT	34	50	214	133
Thailand	MT	435	1270.	1761	2236
Other Countries	MT	79	1380	35	---
Demand	MT	35313	36764	36719	35162
Market Share in Demand					
Domestic industry's Sales	%	77.21	72.26	74.10	71.93
Sales of other Domestic Producer	%	21.24	20.40	20.43	21.33

Import Volumes	%				
China PR	%	.10	.14	0.58	0.38
Thailand	%	1.23	3.45	4.80	6.36
Other Countries	%	0.22	3.75	0.09	-----

50. It is seen that the demand of the subject goods in India have varied in a narrow band over the injury period. However, it is noted that the domestic industry has lost its market share by about 6.8%; whereas the market share of the subject goods from Thailand have increased significantly and that from China PR marginally.

### Price Undercutting

51. The following table shows that the subject goods from the subject countries have been undercutting the prices of the domestic industry.

	Unit	Thailand	China PR
Landed Price	Rs./MT	56639	42151
Net Selling Price	Rs./MT	***	***
Price Undercutting	Rs./MT	***	***
Price Undercutting	Range	5-15	45-60

### Price Suppression/Depression

52. A perusal of the data in respect of the cost of sales and the net selling price shows that the domestic industry has apparently suffered price suppression, if the data of the POI is compared vis a vis the base year data, as it is noted that the cost of sales increased by about 8.1%; whereas the net selling price increased by only 5.8%. However, if the cost of sales and net selling price are seen vis a vis 2009-10 period, then it is noted that while the cost of sales increase by about 3%; but the net selling price increased by about 6.7%. Hence, no significant case of price suppression is noted. Even a case of price depression is not apparent.

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI(Jan 2010 to Dec 2010)
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	123	105	108
Net Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	124	99	106

### Economic parameters relating to the Domestic Industry

53. The other injury parameters relating to the domestic industry are as follows:

### Sales volumes

54. The sales volumes of the domestic industry were analyzed over the injury period as follows:

Sales volume (MT)	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI (Jan 2010 to Dec 2010)
Domestic Sales	MT	27,265	26,564	27,209	25,293
Trend	Index	100	97	100	93
Export Sale	MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	133	135	176
Total Sale	MT	***	***	***	***

55. The Authority notes that during the injury period, the domestic industry's exports grew significantly. However, its domestic sales volume declined during the POI as compared to the base year as well as the preceding year.

### Capacity and Capacity Utilization

S.No	Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
1	Capacity	MT	110,600	172,000	172,000	180,833
2	Total Production	MT	90,935	105,845	101,214	117,663
3	Production – PUC	MT	***	***	***	***
4	Trend	Index	100	152	155	192
5	Capacity Utilization-Plant	%	82.22	61.54	58.85	65.25
6	Capacity Utilization-PUC	%	***	***	***	***
7	Trend	Index	100	98	99.90	117
5	Domestic sales	MT	27,265	26,564	27,209	25,293
6	Export sales	MT	***	***	***	***

56. The Authority notes that domestic industry is producing the subject goods and others castings in the same plant and thus the capacity have been created for subject goods and other castings. However, the plant capacity has increased from 110,600 MT in the base year to 172,000 MT in 2008-09 and further to 180,833 MT in the POI. Further, it may be seen from above that production of the subject goods has increased from \*\*\* MT during the base year to \*\*\* MT during the POI. The capacity utilization of the subject goods has increased from \*\*\*% during the base year to \*\*\*% during the POI. It is thus seen that the capacity utilization for the PUC have increased during the POI as compared to the base year.

**Profitability of domestic industry during the POI has been shown in the following table:**

	2007-08	2008-09	2009-10	POI (Jan 2010)

					to Dec 2010)
Cost to make & sell	Rs\MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	123	105	108
Net Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	124	99	106
Profit/(loss)	Rs\MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	130	63	91

57. A perusal of data further shows that in comparison to the base year, the domestic industry's net selling prices have not increased in proportion to increase in cost of sales. Though domestic industry is earning profit continuously during the injury period on the subject goods but profit to the tune of Rs. \*\*\*/- per unit on subject goods during the base year has reduced to profit per unit of Rs. \*\*\*/- per unit during the POI.

#### Profit/Loss, return on investment and cash profits

58. The position with regard to Profit/Loss, return on investment and cash profits is as follows:

		2007-08	2008-09	2009-10	POI (Jan 2010 to Dec 2010)
Profit/( loss)	Rs./lakhs	***	***	***	***
Trend	Index	100	122	64	87
Return on Investment	%	***	***	***	***
Trend	Index	100	94	43	60
Cash profit	Rs. Lakhs	***	***	***	***
Trend	Index	100	138	83	90

59. It is seen that the domestic industry has been earning profits throughout the injury period. However, the profits increased significantly during the year 2008-09 as compared to the base year 2007-08; but significantly declined during 2009-10 period and then increased again during the POI. It is noted that though the profits in absolute terms improved during the POI as compared to the immediately preceding year; but the profits declined as compared to the base year. The return on investment and cash profits has followed the same trend as that of profitability. While it came down from the base year, to significantly dip during 2009-10 but increased during the POI as compared to the immediately preceding period. However, the return on investment has come down from \*\*\*% during the base year to \*\*\*% during the POI.

#### Inventories:

60. The data relating to inventories shows as follows:

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI(January 2010 to Dec 2010)

Average Stock	Mt	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	159	246	258

61. It is noted that inventories have increased in the POI as compared to the base year. Apparently the domestic industry is not able to sell its produce completely resulting in increase in inventories.

#### Employment, wages and productivity:

62. The data relating to employment, wages and productivity is as follows:

	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI(January 2010 to Dec 2010)
Number of employees-	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	128	132	133
Wages-	Rs.Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	153	167	195
Wages per unit of production-	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	132	141	133
Productivity per employee-	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	92	90	112

63. It is seen that the number of employees have substantially increased over the injury period. The wages per unit of production have also increased significantly during the POI as compared to the base year; whereas the productivity per employee showed a declining trend during the year 2008-09 and 2009-10 as compared to the base year but improved during the POI as compared to the base year. Besides, it is seen that total wages paid showed an increasing trend.

#### Ability to raise funds:

64. It is noted that there are two constituents of the domestic industry. While M/s Welcast Steel Ltd is single product company; whereas M/s AIA Engineering Limited is producing castings as well. It is noted that the profits of the domestic industry have come down during the POI as compared to the base year. However, its ability to raise fund may not have been seriously impacted as yet.

#### Magnitude of the margin of dumping

65. It is noted that the subject goods are being dumped from the subject countries and that the dumping margins are significant.

**Growth:**

66. It is noted that though domestic industry is earning profit during the injury period but the growth of the domestic industry shows a declining trend in the POI as compared to the base year.

**Causal Link****Submissions made by the domestic industry**

67. As regards the Causal link it is stated that:

**Volume Effect:** There is price undercutting due to the imports of the product under consideration from the subject countries which in turn has led to the preference of Chinese goods by the consumers. As a consequence, the domestic industry is losing sales in the domestic market i.e. there is a decline in the market share due to which the capital utilization of the domestic industry is getting adversely affected.

**Price Effect:** There is price undercutting on account of the imports of the product under consideration from the subject countries which has prevented the domestic industry from effecting price increase. The same has resulted in decline in cash profits as well as decline in return on capital employed.

**Examination by the Authority**

68. As per the AD Rules, the Authority is, *inter alia*, obligated to also examine any known factors other than the dumped imports, which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors are not attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry.

69. It was examined whether these other parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry. It is noted that:

- a. **Imports from Third Countries:** - The Authority notes that imports from third countries are negligible.
- b. **Contraction in Demand:** - The Authority notes that the demand has marginally moved on either side over the injury period and no contraction in the demand over the injury period is seen.
- c. **Pattern of consumption:** - No significant change in the pattern of consumption has come to the knowledge of the Authority, nor any interested party has made any submission in this regard.

- d. Conditions of competition: - The investigation has not shown that conditions of competition or trade restrictive practices are responsible for the claimed injury to the domestic industry.
- e. Developments in technology: - The investigation has not shown that there was any significant change in technology, which could have caused injury to the domestic industry.
- f. Export performance of the domestic industry: - The price and profitability in the domestic and export market has been segregated by the Authority for the purpose of present injury assessment. Therefore, the analysis on injury is not misrepresentative due to possible inclusion of export performance.

70. The Authority notes that while listed known other factors do not show injury to the domestic industry, the following parameters indicate that injury to the domestic industry has been caused by dumped imports.

- It is seen that market share of the subject countries have increased, whereas that of the domestic industry has decreased.
- The imports of the subject goods from the subject countries are significantly undercutting the prices of the domestic industry.
- The performance of the domestic industry in terms of cash flow, return on investment, profitability has been adversely impacted.

71. Thus, the Authority is of the view that material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject countries.

#### Magnitude of injury and injury margin:

72. The Authority has determined non-injurious prices of different grades of the subject goods for the domestic industry taking into account the respective cost of production of the domestic industry. The non-injurious price of the domestic industry has been compared with the landed values of the subject goods to determine the injury margins. The injury margins have been worked out as follows:

USD/MT

#### Injury Margin for responding exporter from Thailand (In USD MT)

Product Code	NIP	Landed Value	Injury Margin	Injury Margin %
G-12 15MM	***	***	***	
G-12 17 MM	***	***	***	
G-12 20 MM	***	***	***	
G-12 25 MM	***	***	***	
G-18 40 MM	***	***	***	
			***	0-20

Injury Margin for responding exporter from Thailand (In USD MT)

Product Code	NIP	Landed Value	Injury Margin	Injury Margin %
G-12 15MM	***	***	***	
G-12 17 MM	***	***	***	
G-12 20 MM	***	***	***	
G-12 25 MM	***	***	***	
G-18 40 MM	***	***	***	
			***	0-20

H. Conclusions:

73. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that:

- (a) The product under consideration has been exported to India from the subject countries below their associated Normal values, thus resulting in dumping of the product.
- (b) The domestic industry has suffered material injury.
- (c) The material injury to the domestic industry has been caused by the dumped imports from the subject countries.

I. Indian industry's interest & other issues

74. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the product to the consumers.

75. It is recognized that the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the product manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measures, particularly if the levy of the anti-dumping duty is restricted to an amount necessary to redress the injury to the domestic industry. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the subject goods.

J. Recommendations

76. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information, *inter alia* on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted an investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having

established positive dumping margins as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive anti-dumping duty is required to offset dumping and injury in the instant matter. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

77. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in Col 8 of the table below is recommended to be imposed from the date of this notification in the event of acceptance of these recommendations by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries.

S. No.	Head ing/ subhe ading	Description of goods	Countries of Origin	Countries of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount In US \$ per MT
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1	7325 9100	'Grinding Media Balls' (excluding Forged Grinding Media Balls)	China PR	China PR	Any	Any	387.36
2	-do-	-do-	Any	China PR	Any	Any	387.36
3	-do-	-do-	China PR	Any	Any	Any	387.36
4	-do-	-do-	Thailand	Thailand	Magotteaux Co Ltd, Thailand	Magotteaux Co Ltd, Thailand	158.80
5	-do-	-do-	Thailand	Thailand	Any other except as reflected in column 5		187
6	-do-	-do-	Any	Thailand	Any	Any	187
7	-do-	-do-	Thailand	Any	Any	Any	187

78. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority